॥ श्रीवीतरागाय नमः ॥

दिगंबर जैन

सम्पादक-मूलचंद किसनदास कापड़िया चंदावाड़ी-सूरत।

वीर सं. २४५८
वैशाख
वि. सं. १९८०

वर्ष १७ वां
अङ्क ७ वाँ
सन् १९२९.

विषयानुक्रमणिका।

नं०	विषय	पृष्ठ
१	सम्पादकीय वक्तव्य	१
२	जैन समाचारावलि	२
३	गुजरातमां ब्रह्मचर्याश्रम खोलवानो विचार	५
४	जैन साहित्यका महत्व व उसका प्रचार (ब्र० शीतलप्रसादजी)	९
५	दिनचर्या (पं० अभयचन्द्र काव्यतीर्थ इन्दौर)	१२
६	हमारा काम (पं० प्रेमचंद पंचरत्न- भिंड)	१७
७	श्री विजयधर्मसूरि (सूरत जैनसाहित्य परिषद्का एक निबंध	१८
८	अहिंसा धर्म (पं० शंकरलाल व्यास कसरावद)	२६
९	नीतिरत्नमाला—४ (पं० बालकृष्ण जैन, पालम)	२८
१०	अग्नि (बाबू ताराचंद जैन झालरापाटन सीटी)	२९
११	जैनियोंके लिये आकाशवाणी (मोतीलाल जैन कुराड़ी)	३१
१२	श्रुतपंचमी पर्व (पं० प्रेमचंद पंचरत्न)	३१
१३	दो शब्द (श्री जानकीबाई जैन—अमरा)	३२

पेशगी वार्षिक मूल्य रु० २-०-० पोष्टेज सहित।

आगामी अंक—कई अनिवार्य कारणोंसे यह अंक बहुत देरीसे निकल सका है इसलिये आगामी ज्येष्ठ—आषाढ़का संयुक्त अंक शीघ्र ही प्रगट किया जायगा।

मुनिश्री चंद्रसागरजी—महाराज सिद्धवरकूट पहुंच गये हैं और यहां चातुर्मास करेंगे।

ભટ્ટારક સુરેન્દ્રકીર્તિજીએ માંડલ (અમલનેર, ખાનદેશ) માં ચાતુર્માસ કર્યો છે.

વીસા મેવાડા યુવક મંડળ—વૈશાખ માસમાં સોજીત્રામાં લગનગાળા પ્રસંગે વીસા મેવાડા દિ૦ જૈન યુવક મંડળની ત્રણ બેઠકો વદી ૫–૭–૮ ત્રણ દિવસ ભ૦ સુરેંદ્રકીર્તિજીના પ્રમુખપણા નીચે મળી હતી, જેમાં પ્રથમ દિને અમદવાદ બોર્ડિંગના સુપ્રી૦ પં૦ છોટાલાલ પરવારે જૈન ધર્મ અને જ્ઞાતિનો પરસ્પર સંબંધ એ વિષયપર લંબાણ અસરકારક ભાષણ આપ્યું હતું જેમાં જૈન ધર્મ પાલન કરવાની ફરજો સમજાવી હતી પછી ભટ્ટારકજીએ ન્યાતિ જમણમાં પત્રળાં (બાજ) ન વાપરવા ભલામણ કરી હતી કેમકે એથી ધર્મ હાનિ થાય છે. બીજી સભામાં મંડળના ઉદ્દેશો ને નિયમો નવા ઘડવા માટે કમેટી નીમાઇ હતી તેમજ ત્રીજી સભામાં ઉદ્દેશ ને નિયમો નવા ઘડાયા હતા ને ત્રણ વર્ષ માટે કાર્યવાહક મંડળ નીમાયું હતું તેમજ કેટલાક ઠરાવો પણ પસાર કરવામાં આવ્યા હતા. હિંમતલાલ વરજીવનદાસ મંત્રી.

કેશરિયાજીમાં મુનિને અટકાવ—અમને ખબર મળી છે કે છાણીવાળા મુનિશ્રી શાંતિસાગરજી તા૦ ૧૪–૫–૨૪ ને દિને કેશરિયાજીમાં વેદી અગળ કમંડલ મુકી દર્શન કરવા ગયા એટલે પહેરાવાળા આવી કમંડલ લઇ ગયા ને આપ્યું નહીં તેથી મહારાજે નિયમ લીધે કે જ્યારે કમંડળ આવશે ત્યારેજ અહાર પાણી લેવા. પછી ત્યાંના નરસિંગપરા ભાઇઓ ટપ્પો ભાડે કરી ઉદેપુર કમંડળ લેવા ગયા એટલે ૧૨ વાગતે પેહેરાવાળા કમંડળ મુકી ગયા પછી સાંજે મહારાજે આહાર લીધો. વળી બીજે દિવસે ફરી દર્શનાર્થે ગયા તો કહ્યું કે પીંછી કમંડળ બહાર મુકી દર્શન કરવા જાઓ. આથી મહારાજ બહાર પાર્શ્વનાથના મંદિરમાં દર્શન કરી પાછા પધાર્યા ને બીજે દિને ભુદેર ગામ વિહાર કરી ગયા એટલે તા૦૧૬–૫–૨૪ દિ૦ ભાઇઓ ઉદેપુરથી મહારાણાનો હુકમ લઇને આવ્યા કે દિ૦ મુનિને કોઇપણ રોકટોક કરે નહિ એટલે પછી કેશરિયાજીથી બે જણ ભુદેર મહારાજને તેડવા ગયા જેથી તા૦ ૧૭ મીએ મુનિજી કેશરિયાજી પાછા પધાર્યા અને દર્શન કરવા ગયા ત્યારે કોઇએ પણ હરકત કરી નહોતી. ખેદ છે કે શ્વેતામ્બરી ભાઇઓ વારંવાર નાહક સત્તામણી કરી ઝઘડાઓ ઉભા કરે છે પણ તેમણે જાણવું જોઇએ આ કેશરિયાજીનું દહેરાસર દિગંબરી છે છતાં શ્વેતામ્બરી પણ માને છે તો બસે બન્નેએ મળી સમજીને વર્તવું જોઇએ, એમાંજ શોભા છે.

સોજીત્રાનો લગ્ન ગાળો—ગુજરાતના જુદા જુદા ૫૦ ગામોના અમારા વીસા મેવાડા ભાઇઓ જે આશરે ૨૫૦૦ ની સંખ્યામાં છે તેઓ દર ત્રીજે વર્ષે સોજીત્રામાં વૈશાખ માસમાં એકત્ર થાય છે ને લગ્નાદિ કાર્યો કરે છે તે મુજબ આ વર્ષનો લગનગાળો વૈશાખ માસમાં ૨૦–૨૫ દિવસ સુધી ભરાયો હતો અને આશરે ૪૦–૫૦ લગ્નો થયાં હતાં જેમાં માત્ર બે લગ્નો જૈન વિધિથી પં૦ છોટાલાલ પરવાર (સુપ્રી૦ અમદવાદ બોર્ડિંગ) દ્વારા થયાં હતાં જેમાં એક શેઠ જેસંગભાઇ ગુલાબચંદની પૌત્રી ને શંકરલાલ પાનાચંદના પુત્રના થયા હત્તા જેમાં ૧૦) દાન થયું હતું ને જીવણલાલ હલેચંદની પુત્રી ને કુશલચંદ દ્વારકાદાસના પુત્રના થયા હતા તેમાં ૧૮) દાન મળ્યું હતું એટલે ૨૮) અમદાવાદ બોર્ડિંગને ભેટ મળ્યા હતા. વળી બને લગ્નોમાં વર કન્યાની ઉમર ૧૭ ને ૧૩ ની હતી. તેમજ બીજા લગ્નોમાં કન્યાની ઉપર ઓછામાં ઓછી ૧૧ ની હતી પણ કેટલાક લગ્ન સરખે સરખી ઉમરના હતા! વળી આ લગનગાળા પ્રસંગે કેટલાક નવા વિવાહો (સગાઇઓ) નાની ઉમરનાના ને ૪ વર્ષના અંતરા વગરના પણ થયા હતા! આ લગનગાળામાં એ વાત તો વખાણવાલાયક છે કે કાર્ય પદ્ધતિ એવી છે કે દરેક લગ્ન ગમે તેટલા ઓછા ખર્ચમાં સાદાઇથી થઇ શકે છે ને કોઇ બહુ ઠાઠમાઠ કરે છે તો ઉલ્ટી તેની વાતો થાય છે. ન્યાતિ જમણ પણ ફરજીયાત નથી એ ખુશી થવા જેવું છે.

॥ श्रीवीतरागाय नमः ॥

दिगंबर जैन.

THE DIGAMBAR JAIN.

नाना कलाभिर्विविधश्च तत्त्वैः सत्योपदेशैस्सुगवेषणाभिः ।
संबोधयत्पत्रमिदं प्रवर्त्ततास्, दैगम्बरं जैन-समाज-मात्रम् ॥

वर्ष १७ वाँ.	वीर संवत् २४५०. वैशाख वि० सं० १९८०.	अंक ७ वां

संपादकीय वक्तव्य.

शिखरजी केसमें हमारा विजय।

हमारे पाठक अच्छी तरहसे जानते हैं कि श्री सम्मेद शिखरजी तीर्थपर हम अच्छी तरहसे पूजा सेवा कर सके तथा श्वेतांबरी भाई कोई रोकटोक न करे न कोई नवीन कार्य करे इस प्रकारका केस हमारी तरफसे हजारीबाग व रांचीकी कोर्टमें चार पांच माहसे चल रहा था जिसमें हमारी ओरसे व श्वेतांबरियोंकी ओरसे कई गवाह गुजर चुके थे व अंतमें इसका फैसला हमारे लाभमें ता० २६ मईको रांचीके सब जजने दिया है जो बहुत ही विचारके साथ न्यायपूर्वक दिया है। फैसलाका सार यह है कि शिखरजीका पहाड़ देवस्थान है, श्वेतांबरी किसी किस्मके मकानात पहाड़पर नहीं बंधवा सकते सिवा इसके कि यदि चरण चिह्न पुनः बैठाना हो तो वे वैसे ही बैठा सक्ते हैं और जो चरणचिह्न वर्त्तमानमें नष्ट होगये हैं उन्हें पुनः स्थापित करनेका हुक्म अदालतने दिया है। प्रक्षालके लिये जो पूजा केसमें फैसला मिल चुका है कि चरणोंपर तवक वगैरह हटाकर दिगम्बरी अपना प्रक्षाल करें वही बहाल रहा है।

अर्थात् अब श्वेतांबर भाई जो नये मकानात, मंदिरें, दरवाजे वगैरह बनाना चाहते थे वे नहीं बना सकेंगे। इस केसमें तीर्थभक्त ला० देवीसहायजी, बेरिस्टर चंपतरायजी, बा० अजितप्रसादजी, सेठ दयाचंदजी, बा० निर्मलकुमारजी, बा० हरनारायणजी, बेरिस्टर जुगमंदरदासजी, साहु जुगमंदरदासजी, रा० सा० फूलचंदजी, पं० जयदेवजी, भाई कालूरामजी आदिने बड़ा भारी परिश्रम किया है तथा चंपतरायजी व अजितप्रसादजीने तो अपना घर छोड़कर निःस्वार्थ भावसे इस कुल केसकी पैरवी की थी जिससे हमारी समाजको कमसे कम पचास हजार रु०का फायदा हुआ है। दि० जैन समाज हमेशाके लिये आपकी कृतज्ञ ही रहेगी।

परन्तु इससे हमें संतोष करके बैठ रहनेका नहीं है क्योंकि शायद श्वेतांबर भाई इस पर अपील भी करेंगे तो उसके लिये अभीसे हमें तैयार रहना होगा। उधर राजगिरिमें नया झगडा हमारे श्वेतांबरी भाइयोंने खड़ा कर

दिया है और वे बङ्गाल प्रांतके सभी तीर्थोंके मालिक बनना चाहते हैं इससे राजगिरिका केस भी हमें बहुत पैरवीके साथ लड़नेका है। इसमें भी निःस्वार्थ भावसे पैरवी करनेके लिये बाबू अजितप्रसादजी वकीलने स्वीकारता दी है परन्तु सबसे अच्छी बात तो यह है कि ये तीर्थोंके झगड़े कभी मिटनेवाले नहीं हैं-एक नहीं तो दूसरा, दूसरा नहीं तो तीसरा नया २ झगड़ा उपस्थित होता ही रहेगा इससे खास जरूर तो वर्षोंसे यही है कि किसी प्रकार भी कोशिश करके दिगम्बरी श्वेताम्बरी दोनोंकी एक संयुक्त कमेटी नियत हो और वह तीर्थोंके झगडेका निवटेरा करदे वह सबको मंजूर हो और तीर्थोंमें शांति स्थापनके लिये वही कमेटी कायम रहे। हर्ष है ऐसा एक प्रस्ताव मुजफ्फरनगरकी भारत० दि० जैन परिषद्में हुआ है और उसकी कमेटी इस बातकी कोशिश अभी कररही है और वे किसी बड़े भारी नेताको बीचमें रखकर तीर्थोंके झगडेका निवटेरा करानेके प्रयत्नमें जीतोड़ परिश्रम कर रही है। यदि ऐसा प्रयत्न सफल हो जाय तो हमेशहके लिये तीर्थोंके झगडे मिट जाय और जैनोंके लाखो रुपये वकील वेरिष्टरोंमें व सरकारमें जाते बचेंगे और कौममें शांति स्थापित हो जायगी और ऐसे बचाव व ऐक्यसे भविष्यमें जैन कोम मध्यस्थ जैन बेंक व जैन कालेज स्थापित करनेको तैयार हो सकेगी जिसकी कि बहुत आवश्यक्ता है।

जैन समाचारावलि।

नागौरका शास्त्रभंडार-अभी श्रुतपंचमीके दिन पूज्य ब्र० शीतलप्रसादजी सुजानगढ़से डेप्यूटेशन लेकर नागौर पहुंचे थे और शास्त्रभंडार खुलवानेके लिये बहुत कोशिश की गई परन्तु भंडार नहीं खुला तब बंद भंडारके सामने दूसरा शास्त्र रखकर पूजन की थी। सेठ विनोदीराम वालचंदजीके मूनीम जौहरीमलजीने कहा कि भंडारकी ताली हमारी पास कहीं नहीं है। यह तो भट्टारकके पास है जो औरंगाबादकी तरफ है। फिर दूसरी ओरसे सुन पड़ा कि वीसपंथी सेठ रामदेवजीके पास भंडारकी चाबियें हैं परन्तु उन्होंने भी इन्कार किया इससे कुछ भी सफलता न हो सकी। क्या जाने इस अपूर्व भंडारका जीर्णोद्धार कब होगा?

सुजानगढ़में प्रभावना-सुजानगढ़में ज्येष्ठ सुद १ से ३ वेदी प्रतिष्ठा थी तब ब्र० शीतलप्रसादजी खास पधारे थे व जैनयुवक सम्मेलनका वार्षिकोत्सव सेठ रिद्धकरणजीके सभापतित्वमें तीन दिन तक हुआ था जिसमें कई उपयोगी प्रस्ताव पास हुए हैं जिनमें औषधालय खोलना निश्चित होकर उसके लिये ८०००) का चंदा उसी समय होगया है। हर्ष है कि यहां धर्मप्रेम बहुत है। नित्य त्रिकाल शास्त्रसभा होती है व सुबह शाम दो समय पूजन होती है। ब्रह्मचारीजीके दो व्याख्यान बड़े महत्वके हुए थे।

म० गांधीजी—ने 'आर्यसमाज'के विषयमें अपना अभिप्राय प्रगट किया है कि 'मैंने आर्यसमाजकी बाईबिल 'सत्यार्थप्रकाश'को पढ़ा है। मित्रोंने मुझे तीन कोपी भेजी थी जब मैं येरोडा जेलमें था। इतने बड़े सुधारककी लिखी इतनी बड़ी निराशजनक पुस्तक मैंने दूसरी नहीं पढ़ी है। उन्होंने सत्यपर खड़े रहनेका दावा दिया है परन्तु अज्ञानतासे जैनधर्म, ईसलाम, ईसाई, मत तथा स्वयं हिन्दू मतको औरका और बतलाया है आदि।"

आलंद—में सेठ माणेकचंद मोतीचंदने पाठशाला व औषधालयके लिये ४००००) खर्च करके मकान बनवाया है उसका उद्घाटन मुहूर्त ता० ७-६-२४को होगया। पाठशाला १२ वर्षसे चलती है जिसके लिये १८६२४) का स्थायी फंड होगया तथा केशरबाई कन्याशाला खोलनेका उत्सव श्रीमती मगनव्हेनके हस्तसे हुआ था। इसके लिये भी १०४३६)का चंदा होगया है।

कुकड़ी—में पंच कल्याणक प्रतिष्ठा व रत्नत्रय संवर्द्धिनी सभाका नैमित्तिक अधिवेशन गत मासमें होगया। मुनि शांतिसागरजी भी पधारे थे। सभाके सभापति पं० धन्नालालजी हुए थे और विधवाविवाह निषेधका प्रस्ताव हुआ था।

उदैपुर—में संभवनाथ मंदिरकी तरफसे धानमंडीमें धर्मशाला स्थापित हुई है जहां यात्रियोंको ठहरनेका सब प्रकारका सुभीता है।

आवश्यकता—बड़वानीमें मेघराज दि० जैन पाठशाला व बोर्डिंगके १२से २० छात्रोंके लिये स्थान खाली है। यहां सब प्रकारका सुभीता है।

श्री सम्मेदशिखरजी पर—सेठ हजारीमलजी, हरखचंदजी और प्रतापमलजीकी ओरसे तेरापंथी कोठीमें पंचकल्याणक प्रतिष्ठा करनेका निश्चित हुआ है और उसके लिये २१०००) अलग निकाले गये हैं।

जैन बाला विश्राम—आराका वार्षिकोत्सव वैशाख सुदी १५ को श्रीमती जगमगबीबी (स्व० बा० हरप्रसादजी,के सभापतित्वमें हुआ था। इसमें रिपोर्ट, व्याख्यानादि होकर सभापतिने १०००) आश्रमको भेंट दिये तथा बा० निर्मलकुमारजीने मिष्टान्न बांटकर प्रीतिभोज किया था।

रतलामकी—मा० पा० दि० जैन बोर्डिंगमें ४० छात्र रखनेकी योजना की गई है। प्रथम श्रेणीसे दशवीं श्रेणी तकके विद्यार्थी लिये जांयगे। इसलिये प्रवेश होनेवाले शीघ्र ही सुपरिन्टेन्डेन्टको अर्जी भेजें। इस बोर्डिंगमें यात्रियोंके ठहरनेके लिये धर्मशालाका भी उत्तम प्रबन्ध है। १०० तक यात्री ठहर सकते हैं।

बम्बई सरस्वति भवन—बम्बईमें ऐलक पन्नालाल दि० जैन सरस्वति भवनका वार्षिकोत्सव श्रुतपंचमीके दिन सुखानंद धर्मशालामें रात्रिको ८॥ बजे सेठ हीराचंद नेमचंद दोशी सोलापुरके सभापतित्वमें हुआ था जिसमें रिपोर्ट आदि पढ़ा गया व पं० खूबचन्दजी तथा पं० धन्नालालजीका जैन साहित्य पर व्याख्यान हुआ था। अंतमें सभापतिजीने कहा कि आजतक भवनने सामग्री जुटानेका कार्य किया है परन्तु अब जैन साहित्यका अच्छी तरहसे पठनपाठन हो ऐसी कोई व्यवस्था बंबईमें होनी चाहिये।

कोरम न होनेसे कमेटीकी कार्रवाई नहीं हुई थी, परन्तु भवनकी ओरसे कार्तिकसे एक त्रिमासिक पत्र अवश्य प्रकट होनेवाला है जिसका वार्षिक मूल्य चार या पांच रु० होगा।

स्त्रियोंका सत्याग्रह-अभी थोड़े दिन हुए सुजानगढ़ आदिसे एक संघ राजगिरि गया था। इसमें ९० स्त्रियाँ थीं। वे रेलमें बड़े कष्टसे पहुंचनेपर देवदर्शनको गई तो ओसवाल संघका मैनेजर ताला लगाकर धर्मशालामें छिप गया था। ये स्त्रियां दरवाजे पर दो घंटे तक खड़ी रहीं कि जब मंदिर खुलेगा तब ही दर्शन करके भोजन करेंगी। अंतमें ३ बजे दर्शन करके ही भोजन किया था।

रामदेवीबाई-जो महिला आश्रममें संचालिका थी, उनको छ मासकी छुट्टी दे दी गई है और उनका कार्य रतनदेवीजीको सौंपागया है।

श्रुतपंचमी पर्व।

ज्येष्ठ सुदी ५ के दिन यह पर्व निम्नस्थानों पर मनाये जानेके समाचार मिले हैं—

काम्पिलाजी-में दिनको ११ बजे तक सरस्वति भवनकी रचना करके पूजन की गई फिर शास्त्रभंडारकी सूची तैयार की गई और नवीन वेष्टन भी स्वदेशी खादीके तैयार कर उनमें शास्त्रोंको नंबरवार चिह्न लगाकर बांधे गये।

आरा-में जैनसिद्धांत भवनमें पूजन होकर पं० भुजबली शास्त्रीने व्याख्यान दिया। फिर बा० निर्मलकुमारजीने सबका मिष्टान्न व सीतल जलसे सत्कार किया था। आप २९०००) खर्च करके भवनका नया मकान बना रहे हैं।

इस प्रकार यह पर्व सोलापुर, सूरत, उदैपुर, झालरापाटन, नागौर, पानीपत बम्बई, भिंड, अलीगंज कोल्हापुर, सवईमाधोपुर, टीकमगढ़, महेश्वर, कुंथलगिरि, ईलाहाबाद, बड़नगर आदि स्थानोंपर शास्त्रपूजन व व्याख्यानादि द्वारा मनाया गया था।

राजगृही क्षेत्र-के मुकदमेंकी पेशी ता० ७ जूनको थी। उस दिन न होकर ता० १८ जुलाईको होगी उस दिन हमारी ओरसे लिखित उत्तर पेश होगा।

मुक्तागिरि-क्षेत्रके विषयमें खापर्डेने नागपुर हाईकोर्टमें अपील की है जिसकी पेशी ता० ६ सितम्बरको होगी।

इनामी निबंध-भारत० दि० जैन परिषदकी ट्रेक्ट सीरीजके लिये जो सज्जन जैनसमाजकी प्राचीन रीति नीति और उनका संक्षिप्त क्रमबद्ध इतिहास लिखकर १ अगस्त १९२४ तक भेजेंगे उनमेंसे सर्वोत्तम लेखकको बा० शिवचरणलाल जीकी ओरसे सुवर्णपदक दिया जायगा। लेख एक ओर फुलसकेप २५ पृष्ठोंपर होना चाहिये।

इलाहाबाद-की सुमेरचंद दि० जैन बोर्डिंगमें कालेजकी सब कक्षाओंके विद्यार्थी रखे जाते हैं। रहने, भोजन, व्यायाम आदिका उत्तम प्रबंध है। पत्रव्यवहारका पता—लक्ष्मीचंद्र जैन एम० ए० वार्डन, जैन होटल—प्रयाग है।

दतिया नरेश-का सिवनीमें सेठ पूरनशाहजी, जातिनेता चैनसुखजी, सिं० कुंवरसेनजी आदिने सत्कार किया था तब सोनागिर क्षेत्रका जिक्र होते ही महाराजाने कहा कि इस क्षेत्रकी पूर्ण रक्षाका प्रबंध किया जायगा तथा आप जब आवें हमें अवश्य मिलें आदि।

ગુજરાતમાં બ્રહ્મચર્યાશ્રમ ખોલવાનો વિચાર.

સોજીત્રાના લગ્નગાળામાં એ માટે થયેલો ઉદ્યોગ.

આપણા દિગંબર જૈનોમાં જયપુર, કુંથલગિરી, કારંજા, ઉદેપુર, વગેરે અનેક સ્થળોએ બ્રહ્મચર્યાશ્રમો ખુલી ચુકયા છે. (જ્યાં વિદ્યાર્થીઓ ઉત્તમ રીતે ધાર્મિક વ્યવહારિક શિક્ષણ ને કસરત વગેરેનો લાભ લે છે ને ત્યાંજ પોતાને ખર્ચે કે આશ્રમને ખર્ચે રહે છે) પણ ગુજરાતનુંજ દુર્ભાગ્ય છે કે જ્યાં એક પણ બ્રહ્મચર્યાશ્રમ નથી તેમ એક પણ પંડિત કે ઉપદેશક આજ સુધી તૈયાર થયા નથી કે જેની ખોટ દરેક સ્થળે જણાય છે. વળી આવા આશ્રમોની જરૂર માત્ર પંડિત કે ઉપદેશકજ તૈયાર કરવા માટે નથી પણ ઉત્તમ ગૃહસ્થ બનાવવા માટે પણ છે જેથી સુરતના ભાઈ છગનલાલ ઉત્તમચંદ સરૈયા, અંકલેશ્વરના શા૦ છોટાલાલ ઘેલાભાઇ ગાંધી અને અમોને ઘણો વખત્ત થયાં વિચાર થયા કરતો હતો કે ગુજરાતમાં બ્રહ્મચર્યાશ્રમ ખોલવાની જરૂર છે ને તે માટે કોઇ એવે સ્થળે ચર્ચા કરવી જોઇએ કે જ્યાં આપણો સમુહ મોટી સંખ્યામાં એકત્ર થયેલો હોય. આવો પ્રસંગ આ વર્ષે સોજીત્રાના લગ્નગાળાનો જણાયો અને એ બન્ને મિત્રોને સૂચના કરતાં પ્રથમ ભાઇ છોટાલાલ ગાંધી એક દિવસ અગાઉ ત્યાં પહોંચી ગયા ને એ વાતની ચર્ચા ચલાવી તથા અમો અને ભાઇ સરૈયા વૈશાખ વદ ૭ને દિને સોજીત્રા ગયા હતા, ત્યાં તે દિને ન્યાતિ જમણ હતું, તેમાં સર્વેને ખબર આપી રાત્રે ખાસ સભા બોલાવવામાં આવી જેમાં ન્યાતિના આશરે ૩૦૦–૪૦૦ આગેવાનો હાજર હતાં. એમાં ભટ્ટારક શ્રી સુરેન્દ્રકીર્તિજીના પ્રમુખપણા નીચે અમો, ભાઇ છોટાલાલ ગાંધી, ભાઇ સરૈયા, શેઠ જેશંગભાઇ ગુલાબચંદ વગેરેએ ભાષણ આપી ગુજરાતમાં બ્રહ્મચર્યાશ્રમ ખોલવાની આવશ્યકતા બતાવતાં સર્વેએ એ વાત કબુલ કરી ને કહ્યું કે જો એ સ્થપાય તો દરેક બનતી મદદ આપવા ખુશી છે તથા તેજ વખતે વિચાર થયો કે શરૂઆતમાં રોજનો ૧૫) ખર્ચ થાય અને એ એકેક દિવસનો ખર્ચ આપવાને ભાઇજીભાઈ નાથાભાઇ વેડચ, મંગળદાસ નાથાભાઇ વેડચ, પરસોતમ દામોદરદાસ વેડચ, શંકરલાલ વાપીદાસ આમોદ, ફુલચંદ મોતીલાલ માજલપુર, ત્રીભોવનદાસ અમીચંદ ભોજ, સુલચંદ કસનદાસ કાપડિયા સુરત, છગનલાલ ઉત્તમચંદ સરૈયા સુરત (૧૦ વિદ્યાર્થી લાવી આપવા કબુલ્યું), છોટાલાલ ઘેલાભાઇ ગાંધી અંકલેશ્વર, કાલીદાસ જેશીંગ બિન કીશોરદાસ બોરસદ, મનોરદાસ દેવચંદ (૨ વિદ્યાર્થી મોકલવા કબુલ્યું), નાનચંદ પુંજાભાઇ મારતર વડોદરા (૧ વિદ્યાર્થી મોકલવા કબુલ્યું), કાલીદાસ હરગોવનદાસ આમોદ, મગનલાલ લલ્લુભાઇ વેડચ, કેશવલાલ ત્રીભોવનદાસ વડોદરા, (૧ વિદ્યાર્થી મોકલવા કબુલ્યું) ભોગીલાલ નાથાભાઇ વડોદરા, (૧ વિદ્યાર્થી મોકલવા કબુલ્યું) તથા જગજીવનદાસ રૂઘનાથદાસે પોતાની ઇચ્છા દર્શાવી તથા શેઠ ભગવાનદાસ ઝવેરદાસ સોજીત્રા અને શેઠ લાલચંદ કહાનદાસ વડોદરા એ દરેકે ૧૦૧) આશ્રમ નીકળે તો સ્થાયી ફંડમાં આપવા કબુલ્યું. એ પછી આ આશ્રમ ખોલવાની વ્યવસ્થા કરવા માટે એક સાધારણ સભા નીમવા ને તેમાં સભાસદો તરીકે પોતાનીજ ઇચ્છાથી નામ લખાવવાનો વિચાર થતાં નીચો મુજબ ભાઇયોએ પોતાની રાજીખુશીથી સાધારણ સભામાં નામો લખાવ્યા—

૧	ભટ્ટારક શ્રી સુરેંદ્રકીર્તિજી	ગાદી સુરત
૨	શેઠ ભગવાનદાસ ઝવેરદાસ	સોજીત્રા
૩	,, લાલચંદ કહાનદાસ	વડોદરા
૪	શા૦ છોટાલાલ ઘેલાભાઇ ગાંધી	અંકલેશ્વર
૫	,, લાલચંદ કાલીદાસ	આમોદ
૬	,, ચીમનલાલ લલ્લુભાઇ	બોરસદ
૭	,, કેશવલાલ ત્રીભોવનદાસ	વડોદરા
૮	,, પાનાચંદ છગનલાલ	વેડચ
૯	,, મંગળદાસ નાથાભાઇ	વેડચ
૧૦	,, મોતીલાલ ત્રીકમદાસ માલવી	બાકરોલ

૧૧ શેઠ નરસીદાસ ગંગાદાસ ઈસણાવ
૧૨ શા. શંકરલાલ તાપીદાસ આમોદ
૧૩ ,, જેશંગભાઇ ગુલાબચંદ સોજીત્રા
૧૪ ,, ફુલચંદ વરજલાલ સોજીત્રા
૧૫ ,, હરીલાલ કલ્યાણદાસ સોજીત્રા
૧૬ ,, મનસુખલાલ કાળીદાસ બોરસદ
૧૭ ,, મણીલાલ ચુનીલાલ મહેળાવ
૧૮ ,, નાનચંદ પુંજાભાઇ બી. એ. વડોદરા
૧૯ ,, દામોદરદાસ વ્રજલાલ વડોદરા
૨૦ ,, મોહનલાલ કાળીદાસ સોલીસીટર મુંબાઇ
૨૧ ,, મનસુખલાલ બ્હેચરદાસ સોલીસીટર ,,
૨૨ ,, હિંમતલાલ વરજીવનદાસ વકીલ બોરસદ
૨૩ ,, સુંદરલાલ વીરચંદ વડોદરા
૨૪ ,, કાળીદાસ જેશીંગ બીનહિશોર બોરસદ
૨૫ ,, કેવળદાસ રણછોડદાસ કરમસદ
૨૬ ,, છગનલાલ ઉત્તમચંદ સરૈયા સુરત
૨૭ ,, કેશવલાલ પ્રેમાનંદદાસ બોરસદ
૨૮ ,, દલપતભાઇ જીવાભાઇ દાવોલ
૨૯ ,, મૂલચંદ કસનદાસ કાપડિયા સુરત
૩૦ ,, હીરાલાલ મોતીલાલ વડુ
૩૧ ,, અંબાલાલ વીરચંદ દાવોલ
૩૨ ,, બાઇલાલ નારણદાસ છાણી
૩૩ ,, રતીલાલ જગજીવનદાસ પંડોલી
૩૪ ,, નરોતમ ભીખાભાઇ વડુ
૩૫ ,, સેવકલાલ પુંજાભાઇ વકીલ વડુ
૩૬ ,, ત્રીભોવન અમીચંદ ભોજ
૩૭ ,, કસનદાસ ઇશ્વરદાસ જલાલપુર
૩૮ ,, સોમચંદ કસનદાસ જલાલપુર
૩૯ ,, મગનલાલ પરશોતમદાસ વડોદરા
૪૦ ,, રાયચંદ નારણદાસ સાદરા
૪૧ ,, મુલચંદ હરીલાલ સોજીત્રા
૪૨ ,, મોહનલાલ મગનલાલ બોરસદ
૪૩ ,, મગનલાલ દામોદરદાસ દાવોલ
૪૪ ,, ખીમચંદ ફુલચંદ કાણીસા
૪૫ ,, દેવચંદ બાબરદાસ પીપલાવ
૪૬ ,, ફુલચંદ પુંજાભાઇ માલાવાડા
૪૭ ,, ચુનીલાલ ફીલાભાઇ માલાવાડા
૪૮ ,, ફુલચંદ છગનલાલ માલાવાડા
૪૯ ,, કેશવલાલ સોમચંદ વસો
૫૦ ,, ચુનીલાલ ગુલાબચંદ બોરસદ
૫૧ ,, મુલચંદ પુંજાભાઇ વસો
૫૨ ,, જીવણલાલ હકમચંદ ઓચાસણ
૫૩ ,, ખીમચંદ ફીલાભાઇ કાણીસા
૫૪ ,, ચીમનલાલ જીવાભાઇ કરમસદ
૫૫ ,, સાકેરલાલ માણેકલાલ બોરસદ
૫૬ ,, સોમચંદ જેચંદભાઇ બોરસદ
૫૭ ,, નગીનદાસ નેમચંદ ડૉ૦ બોરસદ

આટલા નામો લખાયા પછી એ મેમ્બરોની એક મીટીંગ કાર્યવાહક કમેટી નીમવા માટે બીજે દિને મેળવવાનું ઠરાવી આ સભા રાત્રે ૧૨ વાગતે વિસર્જન થઇ હતી. તેમજ આ આશ્રમ પાવાગઢમાં માહા સુદ ૧૩ સુધીમાં ખોલવા વિચાર થયો હતો તથા શેઠ લાલચંદ કહાનદાસે પાવાગઢમાં જગ્યાની સગવડ કરી આપવા તથા એ કાર્યમાં બનતી સગવડો કરી આપવા ઇચ્છા દર્શાવી હતી.

બીજે દિને એટલે વદ ૭ની સવારે સ્ત્રીઓની સભા શ્રી. માણેકબાઇ,છોટાલાલ ગાંધીના પ્રમુખપણા નીચે થઇ હતી જેમાં માણેકબાઇ, છોટાલાલભાઇ, મુલચંદભાઇ સરૈયા, વગેરેએ ભાષણો આપી સ્વદેશી પ્રચાર, બાલસગાઇ બંધ કરવા અને બ્રહ્મચર્યાશ્રમની જરૂરતપર વિવેચનો થયાં હતાં તથા ભટ્ટારક સુરેન્દ્રકીર્તિજીના પ્રમુખપણા નીચે બીજે સ્થળે ઉપલા ૫૭ સભાસદોની કમેટી મળી હતી જેમાં બ્રહ્મચર્યાશ્રમ ખોલવા માટેની કામચલાઉ વ્યવસ્થાપક સમિતિ (તેમાં નામો વધારવાની સત્તા સ.થે) આશ્રમના ધારાધોરણનો ખરડો તૈયાર કરવા નીચેના ૯ ગૃહસ્થોની નીમવામાં આવી હતી.

શેઠ ભગવાનદાસ ઝવેરદાસ સોજીત્રા, શેઠ લાલચંદ કહાનદાસ વડોદરા, બ્ર૦ શીતલપ્રસાદજી, મુલચંદ કસનદાસ કાપડિયા (મંત્રી), છોટાલાલ ઘેલાભાઇ ગાંધી, અંકલેશ્વર (સહાયક મંત્રી), છગનલાલ ઉત્તમચંદ સરૈયા સુરત, શંકરલાલ તાપીદાસ આમોદ, હિંમતલાલ વરજીવનદાસ બોરસદ અને માસ્તર નાનચંદ પુંજાભાઇ વડોદરા.

આ ૯ ગ્રહસ્થો પૈકી પાંચ જણે સોજીત્રામાં મળી વિચાર કરી ધારા ધોરણનો ખરડો અંકલેશ્વર મોકલી આપ્યો હતો અને વદ ૧૦ ને દિવસે અમો તથા સરૈયાજી સજોત (અંકલેશ્વર) માં પૂજા પ્રસંગે ગયા હતા ત્યાં બ્ર૦ શીતલપ્રસાદજી, ભાઇ છોટાલાલ ગાંધી, સરૈયા તથા અમોએ મળી આવેલા ધારા ધોરણપર વિચાર કરી નીચે મુજબ ધારા ધોરણ રાખવાનો વિચાર થયો હતો જે નીચે મુજબ છે—

ગુજરાતમાં બ્રહ્મચર્યાશ્રમ માટેના ધારા ધોરણો.

નામ—આ આશ્રમનું નામ " દિગંબર જૈન બ્રહ્મચર્યાશ્રમ " રહેશે.

ઉદ્દેશ—આ આશ્રમનો ઉદ્દેશ ગુજરાત પ્રાંતમાં દિગંબર જૈનધર્મમાં શ્રદ્ધાવાન આદર્શ ગૃહસ્થ ઉત્પન્ન કરવાનો છે.

પ્રબંધ—આ આશ્રમ ચલાવવાનો કાર્યભાર એક સાધારણ સભાને શીર રહેશે તેના સભાસદ દિગંબર જૈન હોય અને ઓછામાં ઓછા ૧૮ વર્ષની ઉમર હોય અને જે વાર્ષિક સભાસદી ફી રૂ૦ ૧૫) આપશે તે થશે. એનું કોરમ ૧/૫ રહેશે.

વ્યવસ્થાપક સમિતિ—આ આશ્રમની વ્યવસ્થા માટે સાધારણ સભામાંથી કમમાં કમ ૧૧ અને વધુમાં વધુ ૨૧ સભ્યો ચુંટી વ્યવસ્થાપક સમિતિ બનાવવામાં આવશે. તેનું કોરમ ૧/૩ નું રહેશે એમાંથીજ સાધારણ સભા કાર્યકર્તાને ચુંટશે.

કાર્યકર્તા—વ્યવસ્થાપક સમિતિમાં નીચે મુજબના કાર્યકર્તા રહેશે.

૧ સભાપતિ
૨ ઉપ સભાપતિ
૧ કોષાધ્યક્ષ
૧ નિરીક્ષક
૧ મંત્રી
૧ સહાયક મંત્રી

એજ કાર્યકર્તા સાધારણ સભાના કાર્યકર્તા ગણાશે.

અધિવેશન—અંતે સભાના પ્રત્યક્ષ અને પરોક્ષ અધિવેશન આવશ્યકતા મુજબ થશે.

બજેટ—વ્યવસ્થાપક સમિતિ વાર્ષિક અનુમાનપત્રક (બજેટ) બનાવે તેજ પ્રમાણે ખર્ચ થઇ શકશે. વધારેની જરૂરત હોય તો સભાપતિ રૂા. ૨૦૦) સુધી મંજુરી આપી શકે અને તેથી વધુ માટે વ્યવસ્થાપક સમિતિ મંજુરી આપી શકશે.

શિક્ષણ—આ આશ્રમમાં દિગંબર જૈનધર્મના શિક્ષણ સાથે અન્ય આવશ્યક લૌકિક શિક્ષણ વ્યવસ્થાપક સમિતિએ નક્કી કરેલા પઠનક્રમ પ્રમાણે આપવામાં આવશે.

નિયમો (૧)—આ આશ્રમમાં દિગંબર જૈન વિદ્યાર્થી દાખલ કરવામાં આવશે તેની ઉમર ઓછામાં ઓછી ૭ અને વધુમાં વધુ ૧૧ વર્ષની હોવી જોઇએ. તેણે ૧૬ વર્ષની ઉપર સુધી બ્રહ્મચારીના રૂપ માં આવશ્યક રહેવું પડશે અને જે વિદ્યાર્થી વિશેષ કારણ સિવાય વચમાંથી ભણવાનું છોડશે તો તેની પાસે મંત્રી નક્કી કરે તે મુજબની નુકશાની છોકરાના પિતા કે વાલી પાસે લેવામાં આવશે.

(૨) અન્ય ઉચ્ચ કોમના વિદ્યાર્થી જે આશ્રમના પઠનક્રમ પ્રમાણે દિગંબર જૈનધર્મની સાથે શિક્ષણ લેવા ઇચ્છા રાખશે તો વ્યવસ્થાપક સમિતિની સંમતિથી દાખલ કરવામાં આવશે.

(૩) આ આશ્રમમાં બે પ્રકારના વિદ્યાર્થી રહેશે. પૈડ વિદ્યાર્થી પાસે માસિક ફી રૂ. ૧૦) લેવામાં આવશે તે ત્રણ મહિનાની પહેલી આપવી પડશે. અનપૈડ વિદ્યાર્થી પૈડ વિદ્યાર્થીઓના હિસ્સા કરતાં વધારે દાખલ કરવામાં આવશે નહીં.

(૪) દરેક વિદ્યાર્થીના શરીરનું વજન દાખલ કરતી વખતે લેવામાં આવશે તેમજ દરમાસે વજન લેવામાં આવશે અને તેની ખબર માબાપ અગર વડીલ વાલીને આપવામાં આવશે.

(૫) કોઇપણ બ્રહ્મચારીને અનિવાર્ય. કારણ સિવાય આશ્રમમાંથી ઘેર જવાની રજા આપવામાં આવશે નહિ. વડીલ કે વાલી આશ્રમમાં આવી બ્રહ્મચારીને મળી શકશે.

(૬) વ્યવસ્થાપક સમિતિ વાર્ષિક પરીક્ષા લેશે તેનું પરિણામ બહાર પાડવામાં આવશે.

(૭) બ્રહ્મચારીની શારીરિક તથા માનસિક અવસ્થા સારી હોવી જોઇએ. શારીરિક અને માનસિક તપાસ કર્યા પછીજ દાખલ કરવામાં આવશે.

(૮) પ્રવેશઃ વેળા બ્રહ્મચારીનો અભ્યાસ તેની આયુ પ્રમાણમાં હોવો જોઇએ.

મુલચંદ કસનદાસ કાપડિયા, સુરત
છોટાલાલ ઘેલાભાઇ ગાંધી, અંકલેશ્વર
મંત્રીઓ.

હવે આ આશ્રમ બાબત ગુજરાતના હુમડ, નૃસિંહપરા, રાયકવાળ વગેરે બધા ભાઇઓની સમ્મતિની જરૂર છે કેમકે સર્વ સંમતિ વગર આવું ભારે કાર્ય ઉપાડી શકાય નહિ, માટે ગુજરાતનાં દરેક ગામ કે શહેરના વીસા હુમડ, દશા હુમડ, વીસા મેવાડા, નરસિંહપુરા તથા રાયકવાળ ભાઇઓએ એ બાબત પોતાની સંમતિ અમને લખી જણાવવી તથા એની સાધારણ સભામાં પોત· પોતાનું નામ પોતાની ઇચ્છાથીજ લખી મોકલવું જોઇએ. તેમજ વ્યવસ્થાપક સમિતિએ જે નિયમો નક્કી કર્યા છે તે બાબત પણ પોતાના વિચારો દરેકે લખી મોકલવા જોઇએ. હાલ તુરત આ બાબતનો પત્રવ્યવહાર સુરત કરવો. ગુજરાતમાંથી આ કાર્યને સંમતિ મળશે ને સાધારણ સભામાં વિશેષ નામો ભરાશે એટલે વડોદરા જેવા સ્થળે સાધારણ સભા બોલાવવાનો વિચાર થઇ શકશે. પાવાગઢમાં માહા સુદ ૧૩ના મેળાપર આ બ્રહ્મચર્ય આશ્રમની સ્થાપના થાય એવી અનેક ભાઇઓની ઇચ્છા છે અને તે પાર પાડવાનું કામ ગુજરાતના ભાઇઓના હાથમાં છે. સંપાદક.

आगरा-म्यूनिसिपालिटीमें जीवदया प्र० सभाके प्रयत्नसे प्रस्ताव हुआ है कि जमनापार बड़े कसाईघरमें ८ वर्षसे कम उमरका कोई भी पशु न मारा जाय । इस कसाईखानेमें नित्य ९०० गाय भैंसादिका घात होता था जो इस नियमसे बहुत कम होगया है ।

सुजानगढ़के प्रस्ताव-जैन युवक संमेलन सुजानगढ़के उत्सवमें इस प्रकार प्रस्ताव पास हुए हैं-(१) संमेलनका नाम अब दि० जैन समाज हितकारिणी सभा रहे, (२) एक मुफ्त देशी औषधालय खोला जाय, (३) स्थानीय पाठशाला व कन्याशालाका प्रबंध इस सभाके आधीन किया जाय व नाममें हितकारी शब्द जोड़ा जाय, (४) एक उपदेशक रखकर राजपूतानामें भ्रमण करावे, (५) पुस्तकालयका नाम हितकारी जैन पुस्तकालय रखा जाय व कार्य बढ़ाया जाय, (६) एक हितकारी सेवासमिति नामक संघ स्थापित किया जाय जो जाति भाइयोंके दुःख दर्दमें तनमनसे सहायता पहुंचावे, (७) ४५ वर्ष ऊपरके विवाह पंचायतीसे बंद हो, (८) स्त्रियोंमेंसे महीन वस्त्रोंका प्रचार कम किया जाय, (९) सभा या पंचायती द्वारा बहिष्कृत व्यक्तिके साथ स्वेच्छाचारीसे कोई खानपानादि व्यवहार न करें, (१०) नागौर शास्त्रभंडार खुलवानेके लिये डेपूटेशन भेजा जाय ।

મુંબઇના-ઐલક પન્નાલાલ દિ૦ જૈન સરસ્વતિ ભવનના વિષયમાં મુંબાઇથી શા૦ ચુનીલાલ મલુકચંદ (ભીલોડા) તથા ગડીયા પાનાચંદ ગુલાબચંદ (વંકાનેર) જણાવે છે કે અત્રે સરસ્વતિ ભવનનું કાર્ય બહુજ સારી રીતે ચાલી રહેલું છે ને ભવિષ્યમાં આ ભવન ઘણીજ ઉન્નતિ કરશે એમ આશા છે. વિશેષમાં ખાસ જણાવવાનું કે આ સંસ્થા માટે હમારા રાયદેશ (ઇડર) ના ભાઇઓએ જે ઐલક પન્નાલાલ મહારાજને ટીપ મંડાવેલી છે તેના જે રૂપ્યા બાકી હોય તે આ ભવનના મંત્રીને સુખાનંદ ધર્મશાલા મુંબઇમાં મોકલી આપવા જોઇએ. એ નાણાંનો સદુપયોગજ થવાનો છે એ નિશ્ચય છે માટે હવે તો એ રકમ આપીજ દેવી જોઇએ વગેરે.

जैन साहित्यका महत्व व उसका प्रचार।

(जैन साहित्य परिषद् सूरतमें पठित, ता० २२ अप्रेल १९२४)

इस अनादि अनंत अकृत्रिम जगतमें जो सम्यक्मार्ग आत्माको शुद्ध करके परमात्मपदमें पहुंचानेवाला है, उसको ही " जैनधर्म " कहते हैं।

इस अनादि लोकमें आत्मा, परमात्मा तथा आत्मासे परमात्मा होनेका उपाय अनादिसे है, इससे जो जैनधर्म प्रवाह रूपसे अनादिकालसे चला आरहा है उस ही को प्रकाश करनेवाला " जैन साहित्य " कहलाता है। जो जैन साहित्य नीचे लिखे महत्वोंके कारण सर्व जीव मात्रका हितकारी है।

(१) यह स्वालम्बन सिखाता है। इसका सिद्धांत है कि यह आत्मा अपने ही पुरुषार्थसे अपनी उन्नति करता है। कहा है—

नयत्यात्मानमात्मैव
जन्मनिर्वाणमेव वा।
गुरुरात्मात्मनस्तस्मा-
न्नान्योस्ति परमार्थतः ॥ ७५ ॥

अर्थात् यह आतमा आप ही अपनेको संसार या निर्वाणमें लेजाता है। इसलिये आत्माका गुरु निश्चयसे आत्मा ही है।

(२) यह जीव मात्रका हित रखने व जीव मात्रकी रक्षा करनेके लिये अहिंसा पर चलनेकी प्रेरणा करता है। कहा है—

सत्वेषु मैत्रीं गुणिषु प्रमोदं,
क्लिष्टेषु जीवेषु कृपापरत्वम्।
माध्यस्थभावं विपरीतवृत्तौ,
सदा ममात्मा विदधातु देव ॥१॥

अमितगति आ० कृत सामायिकपाठ

अर्थ—हे भगवन्! मेरी आत्मा सदा सर्व प्राणियोंमें मैत्री, गुणवानोंमें हर्ष दुखियोंपर दया तथा विपरीत स्वभाव धारकोंपर उदासीन भाव धारण करे।

अवबुध्य हिंस्य हिंसक,
हिंसा हिंसा फलानि तत्वेन।
नित्यमवगूहमानै-
र्निजशक्त्या त्यज्यतां हिंसा ॥६०॥

(पुरुषार्थसिद्धयुपाय)

अर्थ—हिंसा जिसकी हो सकती है, ऐसा हिंस्य प्राणी, हिंसक, हिंसा व हिंसाका फल इन चार बातोंका स्वरूप अच्छी तरह समझकर विचारवानोंको स्वशक्तिके अनुसार हिंसा त्याग देना चाहिये।

साधु सर्वथा हिंसाके त्यागी होते हैं। गृहस्थ जहांतक कृषि, वाणिज्यादि आरम्भका त्याग न करे वहांतक संकल्पी (Intentional) जंतु हिंसाका त्यागी होता है। किंतु आरम्भी हिंसाको यथाशक्ति व यथास्थिति कम करता है।

जैन धर्मधारी मांस, मदिरा, आदि पदार्थोंको कभी सेवन नहीं करते और न इनकी आवश्यक्ता ही है।

(३) परमात्माकी भक्ति उसको प्रसन्न करनेके लिए नहीं किंतु अपने भावोंकी शुद्धिके लिए उस समय तक करनी उचित है, जबतक निज आत्मामें ध्यानकी शक्ति अच्छी तरह दृढ़ न होजावे। मुक्तिका साक्षात्साधन निज आत्म-

समाधि है। कहा है—

न पूजयार्थस्त्वयि वीतरागे,
न निन्दया नाथ विवान्त वैरे।
तथापि ते पुन्यगुणस्मृतिर्नः,
पुनातु चित्तं दुरिताञ्जनेभ्यः॥५७

स्वयंभूस्तोत्र।

अर्थ—हे नाथ! आप राग रहित हैं इससे आपको हमारी पूजासे प्रयोजन नहीं। आप वैर रहित हैं इससे हमारी निन्दासे भी आपको कुछ मतलब नहीं, तो भी आपके पवित्र गुणोंका स्मरण हमारे चित्तको पापके मैलोंसे पवित्र करता है।

(४) इसमें पदार्थोंका स्वरूप एकान्तसे एकांशी न बताकर अनेकान्तसे सर्वांशी बताया है। इससे आत्मा आदि पदार्थोंका यथार्थ स्वरूप कहा गया है। यही स्याद्वाद नयका सिद्धान्त है। स्याद् अर्थात् किसी अपेक्षासे, वाद अर्थात् कहना सो स्याद्वाद है। कहा है—

वाक्येष्वनेकांत द्योती-
गम्यस्प्रातिविशेषकः।
स्यान्निपातोर्थ योगित्वा-
त्तव केवलिनामपि॥१०३॥
स्याद्वादः सर्वथैकान्त,
त्यागात्किं वृत्ताचिद्विधः॥
सप्तभंगनयापेक्षो,
हेयोपादेयविशेषकः॥१०४॥

आप्तमीमांसा, समंतभद्रकृत।

अर्थ—आप केवल ज्ञानियोंके मतमें यह स्यात् अवय है सो वाक्योंमें लगाये जानेसे वस्तु अनेक स्वभावोंको रखनेवाली है इसको झलकाता है तथा किसी विशेष धर्मको विशेष करके बताता है, क्योंकि पदार्थ अनेक धर्मवाला है। यह स्याद्वाद सर्वथा एक धर्मवाला ही पदार्थ है। इसका निषेध करके किसी अपेक्षासे विधान करनेवाला है, इसीके ७ भङ्ग होजाते हैं। स्याद्वाद नय हीसे त्यागने योग्य व गृहण करने योग्यका ज्ञान होता है। जैसे आत्मामें अस्तित्व नास्तित्व दोनों विरोधी स्वभाव हैं, किंतु भिन्न २ अपेक्षासे हैं। इसलिये कहेंगे स्यात् अस्तित्व स्यात् नास्तित्व अर्थात् किसी अपेक्षासे (अपने ही आत्माके द्रव्य क्षेत्र काल भावोंकी अपेक्षासे) आत्मामें अस्तिपना या मौजूदगी है तथा किसी अपेक्षासे (आत्माके सिवाय अन्य पदार्थोंके द्रव्यादिकी अपेक्षा) आत्मामें अन्य या नास्तित्वका अभाव है। यदि ऐसा नहीं मानें तो मेरा आत्मा अन्य आत्मा व अनात्माओंसे भिन्न है ऐसा उपादेय ज्ञान नहीं होगा।

(५) कर्मबन्धकी रीतियोंका लेखा बतानेवाला है। कर्मजड़ सूक्ष्म पदार्थ है। अशुद्ध भावोंसे आत्माके साथ उनका बन्ध पड़ जाता है तथा वही बंध समय २ पर अपना फल दिखाता है, जिससे प्राणियोंको सुख दुख भोगना होता है। कहा है—

जीवकृतं परिणामं
निमित्तमात्रं प्रपद्य पुनरन्ये।
स्वयमेव परिणमन्तेऽत्र
पुद्गलाः कर्मभावेन॥१२॥

(पुरुषार्थसिद्ध्युपाय)

अर्थ—जीवके किये हुए भावोंका निमित्त पाकर

पुद्गल आप ही कर्म रूपसे बंध जाते हैं। जैन साहित्यके सिवाय अजैनोंके साहित्यमें इसका विधान नहीं मिलता है।

(६) इस जैन धर्ममें जो साधुके व गृहस्थके आत्मोन्नतिके साधन हैं उन सबोंको पालते हुए वर्तमानमें सुख शांति प्रगट होती है व मन अतिशय न्यायमार्गी होता है तथा भविष्यमें सुख शांतिके निमित्त मिलते हैं। कहा है—

सुखितस्य दुःखितस्य च
संसारे धर्मएव तवकार्यः।
सुखितस्य तदभिवृद्धयै,
दुःखभुजस्तदुपघाताय ॥ १८ ॥

आत्मानुशासन।

अर्थ—संसारमें सुखी हो या दुःखी हो हरएकको धर्म करना चाहिए। इससे सुखीके सुखकी वृद्धि होती है व दुःखीका दुख दूर होता है।

इत्यादि अनेक महत्वपूर्ण जैन धर्मको प्रकाश करनेवाला यह जैन साहित्य है, इससे जगतमात्रका सच्चा हित होसकता है परन्तु खेद है इस साहित्यका प्रचार बहुत कम है। भारतमें केवल ११॥ लाख ही इसके माननेवाले हैं। इस जैन साहित्य परिषदका कर्तव्य होना चाहिए कि वह इस साहित्यका दुनियामें प्रचार करे, जिसके लिये ये उपाय करने योग्य हैं—

(१) जैन साहित्यके ज्ञाता ऐसे विद्वान् तैयार करना चाहिए जो स्वदेश परदेशमें भ्रमण करके अनेक भाषाओंमें जैनधर्मका महत्व जनताके चित्त पर अंकित कर सकें। चीन, जापान, अमेरिका, आफ्रिका, अरब, युरुप सर्वत्र जैन व्याख्याताओंको जाना चाहिए।

(२) जैन मूल साहित्यको तथा उसके भिन्न २ विषयके रहस्यको प्रगट करनेवाली पुस्तकोंको स्वदेश परदेशकी अनेक भाषाओंमें लाखों करोड़ों प्रतिएं मुद्रित कराकर विना मूल्य या अल्प मूल्यमें वितरण करना चाहिए।

(३) जो अजैन धर्मपर श्रद्धा लावें उनको जैन धर्मकी दीक्षा देकर उनके व्यवसाय व आचार विचारके अनुकूल उनका वर्ण स्थापित करके उनके साथ संबंध करके उनको अपनेमें मिलालेना चाहिए। इन तीन उपायोंको जब तक प्रचारमें न लाया जायगा तबतक केवलमात्र प्राचीन साहित्यकी रक्षा करना धनको जमीनमें गाड़नेके समान होगा। दिगम्बर जैनाचार्योंके प्राचीन साहित्यका—जैसा मुझे ज्ञान है अमूल्य भंडार अभी बहुतसा ताड़पत्रों पर है।

दिगम्बर जैनोंके प्राचीन भंडारके स्थान।

१—कांची देश मदरास (श्रीयुक्त भट्टारक कांचीके पास)
२—मूडबिद्री (साऊथ केनेरा)
३—जैनबद्री (श्रवणबेलगोल—मैसुर)
४—कोल्हापुर (भट्टारक लक्ष्मीसेन)
५— ,, ,,
६—शोलापुर दिगम्बर जैन मंदिर
७—कारंजा (अकोला) मंदिर देवसंघ, सेनसंघ काष्ठासंघ
८—नागपुर दि० जैन मंदिर दीतवारी
९—ईडर ,,
१०—सोजित्रा ,,
११—करमसद ,,

१२–सूरत ,, गोपीपुरा
१३–नागौर (जोधपुर)
१४–जैपुर आंबेर
१५–उदयपुर दि० जैन अग्रवाल मंदिर
१६–इन्दौर उदासीनाश्रम व मारवाड़ी दिगम्बर जैन मंदिर
१७–झालरापाटन मंदिर शांतिनाथ व सरस्वती भवन
१८–बम्बई दि० जैन मंदिर तेरापंथी व ऐलक महाराज पन्नालाल सरस्वती भवन
१९–दिहली धर्मपुरा पंचायती व नया दि० जैन मंदिर
२०–आगरा दि० जैन मंदिर मोतीकटरा
२१–मैनपुरी ,,
२२–बटेश्वर ,,
२३–आरा जैनसिद्धांत भवन
२४–कलकत्ता दि० जैन मंदिर
२५–सीकर ,,
२६–अजमेर
२७–महुआ जिला सूरत
२८–सागवाड़ा (मेवाड़)

जहां २ प्राचीन संस्कृत प्राकृत ग्रंथोंकी संभावना है उनके कुछ नाम ऊपर दिये हुए हैं।

यदि साहित्य परिषद जैन साहित्यको अनेक भाषाओंमें अनेक देशोंमें प्रचार करनेके लिए कोई योजना करके यथोचित द्रव्य व प्रबंधकी व्यवस्था करेगी तो मैं इस परिषदका अधिवेशन सफल समझूंगा। जैन साहित्य प्रचारका प्रेमी–

ब्र० शीतलप्रसाद ।

दिनचर्या ।

(लेखकः—पं० अभयचंद काव्यतीर्थ–इन्दौर ।)

[विशेषांकसे आगे]

कोई यह समझकर कि अधिक खानेसे अनेक रोग पैदा हो जाते हैं बहुत ही थोड़ा खाने लगे तो वह भी उलटे रास्तेपर है क्योंकि पाचनशक्ति बढ़ी हुई है और हलके निस्सार पदार्थ खानेको मिलें ऐसी हालतमें उस पाचन शक्तिको पूरा दह्य (पचाने लायक) इंधन (भोजन) नहीं मिलनेसे शरीरकी धातुओंका पाक करती है। जिससे शरीरके बल, वीर्य्य, ओजका नाश होता है।

जो बहुत ज्यादा भोजन करते हैं उनके आहारका परिपाक बड़ी मुश्किलसे होता है।

थके हुए आदमीको उचित है कि जबतक थकावट दूर न हो न भोजन करे और न पानी पिये ऐसा नहीं करनेसे, बुखार, वमन, अजीर्ण आदि रोग पैदा होजाते हैं।

जिस समय पेशाब पाखाना जानेकी इच्छा हो, चित्त खिन्न हो, बहुत अधिक प्यास लगी हो उस समय भोजन न करे अर्थात् इन सब बाधाओंको दूर करके भोजन करे।

भोजन करनेके बाद शीघ्र ही व्यायाम और मैथुन करनेसे भोजनका परिपाक अच्छी तरहसे नहीं होता और कभी २ उदरशूल व वमन भी होने लगती है।

जन्मसे लेकर जो चीज खाने, पीने व लगानेमें उपयोग करनेसे अनुकूल पड़ जाती है वह

विष भी क्यों न हो पथ्य है ।

जो वस्तु हितकर है परन्तु प्रकृतिके प्रतिकूल है तो भी उसका सेवन करे और जो वस्तु अंतमें दुःख देनेवाली अहितकर है वह तत्कालमें प्रकृतिके अनुकूल–सुखकर भी हो उसका सेवन नहीं करे ।

बलवानको सभी भली बुरी चीजें पथ्य हैं–पचसकती हैं ऐसा समझकर हालाहल जहर नहीं खाना चाहिये क्योंकि जो अत्यन्त निपुण और अगद तन्त्रके जानकार भी हैं अर्थात विष वैद्य हैं, उनका भी किसी समय समुचित चिकित्सा नहीं करनेसे विषसे भी मरण होजाता है अर्थात विष उनका मुलाहजा नहीं करता है। इस विषवैद्यके दृष्टान्तसे पूर्वोक्त उपदेशका समर्थन किया गया है जिस तरह विषके खाने व सांप आदिके काटनेसे और उसका उचित प्रतीकार नहीं करनेसे विषवैद्यकी मृत्यु हो जाती है उसी तरह अंडबंड पदार्थोंके खानेसे मनुष्यकी भी मृत्यु हो जाती है ।

अतिथि और अपने आश्रितों (जिनका भरण पोषण करना अपने आधीन हो) को आहार प्रदान करनेके बाद स्वयं भोजन करना चाहिये ।

चित्तको एकाग्र करके देव, गुरु और धर्मकी उपासना करना चाहिये ।

स्वतंत्रता–स्वाधीनता मानवजीवनके लिये परम रसायन है। यह परम रसायन जिनके पास नहीं है वे जीते हुए भी मृतकोंके समान हैं । आचार्य वादीभसिंहने लिखा है—

जीवितात्तु पराधीनाज्जीवानां मरणं वरम् ।

पराधीन जीवनसे मरना ही अच्छा है ।

जंगलोंमें स्वच्छन्दता पूर्वक विहार करनेवाले गजराज हमेशा सुखचैनसे जीवन विताते हैं ।

हमेशा सुखके लिये सेवन करने योग्य दो ही वस्तुयें हैं । १ रसीला, मनोहर, स्वच्छन्द भाषण २ और तांबूल भक्षण ।

बहुत अधिक समय तक उकरूँ बैठकसे नहीं बैठना चाहिये क्योंकि उकरूँ बैठक बैठनेसे रसको बहानेवाली नसें जड़ होजाती हैं जिससे उनमें भलीभांति रसका संचार नहीं होता है अतएव वह अंग सूख जाता है ।

हमेशा बैठे ही नहीं रहना चाहिये जो हमेशा बैठे रहते हैं वे आलसी होजाते हैं और उनके हाथ पैर आदि अंग शिथिल पड़ जाते हैं, तोंद बढ़ जाती है तथा विचारशक्ति और संभाषण शक्ति भी कुंठित होजाती है ।

शारीरिक व मानसिक परिश्रम मात्रा (हद) से अधिक नहीं करना चाहिये क्योंकि अधिक परिश्रम करनेसे अकालमें ही बुढ़ापा आ जाता है।

किसी भी कार्यके प्रारंभ करनेके पहिले परमात्माका स्मरण अवश्य करना चाहिये ।

जो नास्तिक हैं देव गुरु धर्मको सच्चे हृदयसे नहीं मानते हैं ऐसे पुरुषोंके ऊपर कोई भी विश्वास नहीं करता है ।

जिसके क्लेश, कर्मोंका फल और इच्छायें नहीं हैं वही ईश्वर है । अर्हन्, अज, अनंत, शंभु, बुद्ध, तमोन्तक (अज्ञान अंधकारका नाश करनेवाला) ये सब विशेष नाम उसी ईश्वरके हैं।

जिस तरहसे अपनेको पूर्ण सुख स्वाधीनता मिले उसी तरहसे कार्योंके लिये दिन रात्रिका

विभाग कर लेना चाहिये ।

कालका विभाग न करके वे मौके कार्योंके करनेसे किसी भी कार्यमें सिद्धि नहीं मिल सकती प्रत्युत मनुष्य अनेक आपदाओंके जालमें फँस जाता है ।

बहुत जरूरी काममें समयकी प्रतीक्षा नहीं करना चाहिये । अवश्य करने योग्य कार्यमें मौकाको हाथसे खोना न चाहिये ।

अपनी रक्षामें किसी समय भी प्रमाद नहीं करना चाहिये ।

जो आदर सन्मानका भाजन और अधिकारी नहीं हो उसको राज सभामें प्रवेश नहीं कराना चाहिये ।

पूज्य पुरुषोंका उठ करके अभिवादन व आदर सत्कार करना चाहिये ।

देव गुरु और धर्म संबंधी कार्योंको किसीके भरोसेपर न छोड़कर अपने हाथोंसे करना चाहिये ।

किसी प्राणीको कष्ट पहुंचाकर या वध करके काम क्रीडा न करे ।

पर स्त्री माता भी क्यों न हो उसके साथमें एकान्त स्थानमें निवास नहीं करना चाहिये ।

क्रोधका बड़ा भारी कारण उपस्थित होनेपर भी माननीय पुरुषोंका उल्लंघन व तिरस्कार नहीं करना चाहिये ।

जबतक किसी आत्मीय-विश्वस्त पुरुषके द्वारा शत्रुके स्थानकी परीक्षा (जांच) न करा ली जावे तबतक उस स्थानमें प्रवेश न करे ।

अनजानी सवारी (घोड़ा आदि) पर न बैठे ।

जबतक किसी तीर्थ स्थान व संघ (मात्रके बारेमें आत्मीय पुरुषोंके द्वारा परीक्षा (जांच) न करा ली जावे तबतक उस तीर्थस्थान व संघमें प्रवेश नहीं करे ।

असंभ्रान्त नीतिज्ञोंने जिस मार्गपर चलनेका उपदेश दिया है उसी मार्गपर चलना चाहिये ।

विषको नाश करनेवाली औषधियों और मणियोंको हमेशा धारण करना चाहिये । आचार्य वाग्भटने भी लिखा है 'धारयेत्सततं रत्न सिद्ध मंत्र महौषधीः' उत्तम शुभ मणियों सिद्ध मंत्रों और महौषधियोंको हमेशा धारण करना चाहिये ।

सलाहकार, चिकित्सक और ज्योतिषियोंको हमेशा अपने पास रखना चाहिये ।

भोग्य (अन्नादि) उपभोग्य (वस्त्रादि) वस्तुएँ सविष हैं अथवा निर्विष इस बातकी अग्नि और इनको बनानेवाले, देनेवाले व रखनेवाले पुरुषोंके नेत्रोंकी चेष्टा, वार्तालाप, शरीरकी चेष्टा, मुखकी विकृति और प्रश्न आदिसे परीक्षा करे । आचार्य वाग्भटने भी लिखा है—

विषदः श्याव शुष्कास्यो
विलक्षो वीक्षते दिशः ।
स्वेदवेपथुमांस्त्रस्तो भीतः स्खलति जृंभते ॥ १२ ॥

अष्टांग हृदय सूत्रस्थान अ० ७

विषको भोजन आदिमें मिलाकर खिलानेवाले पुरुषका मुख सूख जाता है और काला पड़ जाता है, लज्जित होकर चारों तरफ देखता है कि मेरे दोषको कोई समझ तो नहीं गया ऐसी शंकासे शरीरमें पसीना और कपकपी आजाती है, उद्विग्न चित्त और भयभीत होता है, चलते समय पद पदपर लड़खड़ाता है और अकारण जंभाई लेता है ।

अमृत वायु (बायें नथनेकी श्वास,–वाम स्वर) के बहनेपर ही हमेशा कार्योंको करो।

दाहिने नथनेसे जब श्वास आवे तभी भोजन, मैथुन, और युद्ध करनेकी इच्छा करे।

जो दूसरोंको अपने समान बनाता है अथवा अपने समान समझता है वह न किसीका वैरी होता है और न कोई उससे द्वेष करता है।

मनकी प्रसन्नता, परवार की अनुकूलता, शुभ शकुन, अनुकूल और शुभ वायुका वहना ये आगामी होनेवाली कार्यकी सिद्धिके सूचक लक्षण हैं।

भयानक जंगल व पहाड़ोंमें अकेले नहीं घूमे। मन वचन और कायको अपने वशमें रक्खे। आकाशमें चंद्र आदि नक्षत्रोंके दिखनेसे पहिले संध्योपासना करे।

जहांतक होसके दिनमें संभोग नहीं करे यदि इन्द्रियोंके परवश होने आदिके कारण दिनमें चक्रवाककी तरह संभोग करे तो रात्रिमें स्निग्ध दूध आदि पदार्थोंका सेवन अवश्य करे।

चकोरकी तरह रात्रिमें संभोग करनेकी इच्छा करनेवाला पुरुष दिनमें स्निग्ध पदार्थोंका सेवन अवश्य करे।

कबूतरकी तरह अहर्निश विषय सेवन करनेवाले पुरुषको उचित है कि वह हमेशा बाजीकरण वृष्ययोगोंका सेवन अवश्य करे। आचार्य वाग्भटने भी लिखा है–

वाजीकरणमन्विच्छेत्सततं विषयी पुमान्।
अल्प सत्वस्यतु क्लेशै र्वाध्यमानस्य रागिणः॥
शारीरक्षय रक्षार्थं वाजीकरणमुच्यते॥ ५॥
अष्टांग हृ० उत्तर तंत्र अ० ४०।

विषयी पुरुषको हमेशा बाजीकरण (पौष्टिक वीर्यवर्धक) द्रव्योंका सेवन करते रहना चाहिये।

जिनमें बल पौरुष कम हैं परन्तु विषयी अधिक हैं अतएव विषय सेवनसे उत्पन्न हुए रोग जिनका पीछा नहीं छोड़ते हैं ऐसे पुरुषोंके शरीरकी क्षयसे रक्षा करनेके लिये ही वाजीकरण चिकित्सा कही जाती है।

ठौकरी (बहुत कालसे व्यानी हुई) गायके दूधमें बनाई गई उड़दकी खीर सबसे श्रेष्ठ बाजीकरण योग है। जो स्त्री कामिनी नहीं हो उससे संभोग नहीं करे।

समान–समायोग (बराबरीका सम्बन्ध) से बढ़कर दूसरा कोई श्रेष्ठ उपाय स्त्री पुरुषोंको वशमें करनेका नहीं है।

समान प्रकृति, समान उपदेश और काम क्रीड़ामें एकसी स्वाभाविक चतुरता ये तीनों ही समान समायोग होनेमें कारण हैं।

जिसको पाखानेका वेग आया है, भूखा प्यासा हो व जिसकी आंखें दुखने आई हैं, ऐसे पुरुषोंको विषय संभोग नहीं करना चाहिये। यदि ऐसी दशामें विषय संभोग करेगा तो शरीरके जीवनभूत ओजका नाश होगा।

प्रथम तो इन रोगियोंके दुषित वीर्यसे गर्भाधान होना ही असंभव है यदि कदाचित गर्भ भी रह जाय तो उत्पन्न हुआ बालक, अत्यन्त दुर्बल, अल्पायु, माताके उन २ रोगोंवाला, और सदा रोगी होगा।

तीनों संध्याओंमें, दिनमें, जलमें और देवालयमें मैथुन नहीं करे।

प्रत्येक पर्वमें, पर्वकी संधिमें और क्षीणतिथि (घटे हुए दिन) में कुलीन स्त्रीके साथ संभोग नहीं करे।

जिस स्त्रीके साथ पाणिग्रहण हुआ है उसी स्त्रीके साथ संभोग करे उससे भिन्न दूसरी स्त्रियोंपर निगाह भी नहीं डाले।

जो कुल, विद्या, धन, उम्र और आम्नायके अनुरूप भेष व आचार विचार नहीं रखता है ऐसे किस पुरुषकी हंसी नहीं होती अर्थात् होती ही है।

द्वारपाल (पहिरेदारो) को उचित है कि, जबतक किसी चीज़की परीक्षा और परिशोध नहीं कर लेवे तबतक किसी चीजको व पुरुषको न राजगृहके भीतर जानेदेवे और न बाहिर आनेदेवे।

ऐसी ऐतिहासिक घटनायें प्रसिद्ध हैं कि औरतके भेषको धारण करनेवाले कुन्तल देशके महाराजाके गुप्तचरने कानके पासमें गुप्तरूपसे छिपायी हुई तलवारसे पल्लवक राजाको और हयपतिने मेढेके सींगमें भरे हुए विषके द्वारा कुशस्थलेश्वरको मार डाला था।

हरएक स्थानमें अविश्वास नहीं करना चाहिये क्योंकि ऐसा करनेसे किसी जगह भी कोई काम सिद्ध नहीं होसकता।

पवित्र काश्मीरी केशर-

का भाव ३) फी तोला है।

मैनेजर-दि० जैन पुस्तकालय-सूरत।

हमारा काम।

(१)

हमारा कैसा है यह काम।
कि जासे होता है बदनाम॥
किन्तु हम कुछ भी सोचें नहीं।
दुर्गणोंसे दिल मोचें नहीं॥

(२)

सुना है हमने ऐसा ब्यान।
सताना नहीं पराई जान॥
किन्तु देते न इस पर ध्यान।
दुखावें सदा पराये प्रान॥

(३)

यदि अब आप बताते हैं।
कि हम जैनी कहलाते हैं॥
अहिंसा धर्म हमारा है।
जो सब जीवोंको प्यारा है॥

(४)

दया ही धर्म हमारा है।
दया ही कर्म हमारा है॥
दयाके खातिर देखो हम।
छान पय पीते देखो हम॥

(५)

रात्रि भोजन नहिं करते हैं।
न पर प्राणोंको हरते हैं॥
आप क्यों यह बतलाते हैं।
कि परके प्राण सताते हैं॥

(६)

आपने जो कुछ किया बयान।
सुना मैंने उसको धर ध्यान॥
किन्तु मैं भी कुछ जतलाता।
तुम्हारी भूलें बतलाता॥

(७)

इसे मैं भी करता स्वीकार।
आपका धर्म अहिंसा सार॥
अहिंसा कहते हैं किसको।
आप ही बतलादें मुझको॥

(८)

यदि नहीं आप बताते हैं।
तो फिर क्यों! उलटे जाते हैं॥
हृदयको जरा थामलो तुम।
अक्कलसे जरा काम लो तुम॥

(९)

न अपने प्राण दुखाना है।
न परके प्राण सताना है॥
दयाका भाव दिखाना है।
अहिंसा यही कहना है॥

(१०)

बात यह हमने भी जानी।
आप नित पियें छान पानी॥
रात्रि भोजनके त्यागी हो।
अहिंसापथ अनुरागी हो॥

(११)

रात्रिको क्या नहिं खाते हो।
साफ क्यों नहिं बतलाते हो॥
सिर्फ क्या अनाज तज देना।
दुग्ध मिष्ठभोजन तज देना॥

(१२)

मिठाई कंदमूल खाते।
कहो हिंसासे बच जाते॥
बड़ी पापड अरु पिया अचार।
वर्षभरकी करते स्वीकार॥

(१३)

पर्वमें हरी वस्तुका त्याग।
करोहो कर धार्मिक अनुराग॥
कावते घोटकपर बहु भार।
उदरभर देते नहीं अहार॥

(१४)

कलह आपसमें करते हो।
भाईसे भाई लडते हो॥
मुकदमा बाजी करते हो।
गवाही झूठी भरते हो॥

(१५)

सत्य व्यापार छोड दीना।
झूठका मारग गह लीना॥
कपटकी पहिन गलेमें माल।
खूब ही ठगा पराया माल॥

(१६)

बताओ इन कामोंमें क्या?
नहीं होती है हिंसा क्या?
इसीसे मेरा कहना है।
जिसे तुमको गहलेना है॥

(१७)

यदी हो दया धर्मधारी।
छोड दो विपरीतता सारी॥
धारकर सत्य अहिंसाको।
"प्रेम" छोडो सब हिंसाको॥

प्रार्थी—प्रेमचंद्र पंचरत्न
भदावर प्रा० दि० जैन वि० भिण्ड

श्री विजयधर्मसूरि.

(जैन साहित्य परिषद सुरतमां ता० २२-५-२४ने दिने वंचायलो निबंध).

He is one of the most impressive personalities I ever met within the whole world.

(Dr. Sylvain Levi).

મેં આના જેવા પ્રભાવશાળી પુરૂષને વિશ્વમાં પ્રાપ્ત નથી કર્યો.

જે જૈન મહાત્મા માટે ફ્રેંચનો પ્રસિદ્ધ વિદ્વાન ઉપર પ્રમાણેનો અભિપ્રાય આપે છે, તેમની સાહિત્ય પ્રવૃત્તિ સંબંધી કંઇક રૂપરેખા આજ હું આ પરિષદ્ સમક્ષ રજુ કરૂં તે અગાઉ એટલું કહેવું આવશ્યક સમજું છું કે આ પરિષદ્ તેજ સાહિત્ય પરિષદ્‌ની બીજી બેઠક છે, જેનો પ્રારંભ ઇ. સ. ૧૯૧૪ માં સ્વર્ગસ્થ શ્રી વિજયધર્મસુરિ મહારાજના પ્રયત્નથી જોધપુરમાં થયો હતો. અને જેના પ્રમુખ ડૉ. શતીશચંદ્ર વિદ્યાભૂષણ હતા. ઘણા વર્ષો બાદ પણ તેની આ બીજી બેઠક ભરાય છે એ જાણી આનંદ થાય છે. અને આ કાર્ય ઉઠાવનાર મુનિરાજ માણેક મુનિ તથા શેઠ જીવણચંદ સાકેરચંદ જવેરીને હું ધન્યવાદ અપું છું.

મહાત્મા વિજયધર્મસુરિને કોણ નથી જાણતું? જેમણે પોતાનું આખું જીવન સાહિત્ય પ્રવૃત્તિ દ્વારા જૈન શાસનની સેવામાં વ્યતીત કર્યું છે, એના સંબંધમાં આટલા ટુંકા સમયમાં અને ટુંકા કલેવરમાં શું લખી શકાય? પણ ખરૂં કહું તો આ સાહિત્ય મુર્તિના સંબંધમાં અત્યાર સુધીમાં જે કાંઇ લખાયું છે, તેજ જોવાની અને તે ઉપર મનન કરવાની જૈન સમાજને ફુરસદ નથી-બીજા શબ્દોમાં કહું તો જૈનકોમ વ્યાપારી કોમ હોવાથી સાહિત્ય એ શી વસ્તુ છે અને સાહિત્ય પ્રવૃત્તિ કરવામાં કેટલી મુશ્કેલીઓની સામે થવું પડે છે, એથી એ અનભિજ્ઞ છે, અને તેથી આ જગત્પૂજ્ય મહાત્મા સંબંધી-આ મહાત્માની સાહિત્ય પ્રવૃત્તિ સબંધી-જેટલા જૈનેતરો-ખાસ કરીને પાશ્ચાત્ય દેશોના વિદ્વાનો અભિજ્ઞ છે, તેટલા જૈનો નથી. અસ્તુ! ગમે તેમ હો! આજે મારૂં કર્તવ્ય સ્વર્ગસ્થ સુરીશ્વરજી મહારાજની સાહિત્ય પ્રવૃત્તિનું યત્કિંચિત્ અંશમાં દિગ્દર્શન કરાવવું એ છે. આશા છે કે આપ સૌ આ મહારાજશ્રીની સાહિત્ય પ્રવૃત્તિ ઉપર અવશ્ય ધ્યાન આપશો.

પરિચય—

આચાર્ય શ્રી વિજયધર્મસુરિજી મહારાજનો અંગત પરિચય કરાવવો એ સૂર્યને દીપકથી બતાવવા બરાબર છે. જેમના સવાસો શિષ્યો આજ જૈન સમાજ ઉપર ઉપકાર કરી રહ્યા છે, એવા શાન્તમૂર્તિ મહાત્માશ્રી વૃદ્ધિચંદ્રજી મહારાજના આ શાસનપ્રભાવક શિષ્યરત્નના જીવન પ્રસંગો તેમનાં અનેક ભાષામાં જેવી કે હિન્દી, ગુજરાતી, અંગ્રેજી, મરાઠી, સિંહલી, ઉર્દુ, ફ્રેંચ, જર્મની, ઇટાલી આદિ ભાષાઓમાં પ્રગટ થએલાં જીવન ચરિત્રો ઉપરથી આપ સૌ જોઇ શકો છો, અને તેથી સમય અને સ્થાનનો અભાવ હોવાથી તેમનાં જીવન સંબંધી બીજું કાંઇ પણ ન લખતાં આ નિબંધમાં માત્ર હું તેમની સાહિત્ય પ્રવૃત્તિનોજ ઉલ્લેખ કરવા ઇચ્છું છું.

સંસ્થાઓ—

આપણા આ સ્વર્ગસ્થ આચાર્યશ્રીનું લક્ષ શિક્ષા પ્રચાર તરફ પ્રથમથીજ ગયું હતું. જે વખતે જૈન સાહિત્ય અંધકારમાં સડી રહ્યું હતું, જે વખતે સંસ્કૃત અને પ્રાકૃત ભાષાની શિક્ષાપ્રણાલી જૈન સમાજમાંથી નષ્ટપ્રાયઃ થઇ હતી અને જે વખતે સારા સારા જૈન સાધુઓ પણ સુબોધિકાનો પાઠ કરી લેતાં પોતાને મહાન વિદ્વાન સમજતા હતા, તે વખતે આ સુરિજીએ આ અંધકારમાંથી જૈન સમાજને બહાર કાઢવાનું બીડું ઝડપ્યું હતું. સંસ્કૃત અને પ્રાકૃતનો ઉદ્ધાર કરવાનું કામ હાથ ધરી કાશી જેવા ક્ષેત્રમાં **“ યશોવિજય જૈન સંસ્કૃત પાઠશાળા ”**

સ્થાપન કરી. આ પાઠશાળાએ જે ઉપકારો કર્યા છે એ એનો ઉંડો અભ્યાસીજ સમજી શકે તેમ છે.

આ પાઠશાળા માટે વધારે ઉંડા નિરીક્ષણમાં ન ઉતરીએ તોપણુ અત્યારે એટલું તો જોઇ શકાય છે કે સાધુ અને ગૃહસ્થોમાં જે એક મોટી સંખ્યા વિદ્વાનોની જોવાય છે તે આ પાઠશાળાનેજ આભારી છે.

પંડિત હરગોવિંદદાસ, બેચરદાસ, વેલજીભાઇ, જગજીવનદાસ, વીરજીભાઇ, ભીમજીભાઇ, (સુશીલ) ત્રીભોવનદાસ, અમૃતલાલ, દલીચંદ, તથા સાધુ વર્ગમાં આચાર્યશ્રીનો આખો શિષ્યવર્ગ વિગેરે આ પાઠશાળાનાજ વિદ્વદ્ રત્નો છે. ટુંકમાં કહું તો લગભગ ૪૦ વિદ્વાનો આ પાઠશાળામાંથી ઉત્પન્ન થયેલા અત્યારે જૈન સમાજમાં વિદ્યમાન છે

યદ્યપિ આ પાઠશાળા આચાર્યશ્રીની દેખરેખ નિચે માત્ર ૧૦ વર્ષ ચાલી, તેના જીવન પટ ઉપર અનેક આઘાત પ્રત્યાઘાતો થયા તેમ છતાં પણુ એટલી ટુંકી મુદતમાં પાઠશાળાએ સમાજને જે ફળ ચખાડયું છે એ કોઇ પણ રીતે ભુલી શકાય તેમ નથી. પાઠશાળાએ વિદ્વાનોજ ઉત્પન્ન નથી કર્યા, પરંતુ જૈન સમાજમાં સંસ્કૃત અને પ્રાકૃતના અભ્યાસનું જબરદસ્ત વાતાવરણ ઉત્પન્ન કર્યું છે એટલુંજ નહિ પરન્તુ પાશ્ચાત્ય દેશોમાં જૈન સાહિત્યની જે પ્રવૃત્તિ વધવા પામી છે તેમાં પાઠશાળાનો અને આચાર્યશ્રીએ સ્થાપેલ **યશોવિજય જૈન ગ્રંથમાલાનોજ** મોટો હિસ્સો છે. આચાર્યશ્રીની આ બંન્ને સંસ્થાઓએ, પાશ્ચાત્ય વિદ્વાનોમાં, કોઇ પણુ જુનામાં જુની અને સંગીન કામ કરનારી સંસ્થાથી પણુ ચઢીઆતી ખ્યાતિ પ્રાપ્ત કરી છે.

આચાર્યશ્રીની આ બે સંસ્થાઓ ઉપરાંત, **યશોવિજય જૈન ગુરૂકુળ પાલીતાણા, યશોવૃદ્ધિ જૈન બાલાશ્રમ મહુવા, જૈન શ્વે૦ મુ૦ પૂ૦ બોર્ડિંગ લીમડી, શ્રી વીરતત્વ પ્રકાશક મંડળ, શિવપુરી', હેમચંદ્રાચાર્ય જૈન લાયબ્રેરી બનારસ, ધર્મવિજય જૈન લાયબ્રેરી વીરમગામ, વિજયધર્મ લક્ષ્મી જ્ઞાન મંદિર આગરા** આ પણુ આદર્શ સંસ્થાઓ અત્યારે વિદ્યમાન છે.

આ પ્રસિદ્ધ અને આદર્શ સંસ્થાઓ ઉપરાંત ગુજરાત, કાઠીયાવાડ, મારવાડ અને મેવાડમાં સ્થાપન કરાએલી અનેક નાની મોટી સંસ્થાઓ પણુ મૌજુદ છે.

શિક્ષાનો પ્રચાર અને અજ્ઞાન રૂપિ અંધકારને દૂર કરવાનો સૂરિજીનો આ પ્રયત્ન જૈન સમાજથી કોઇપણુ રીતે ભૂલાય તેમ નથી.

ગ્રંથ પ્રકાશન—

ઉપર જે **"યશોવિજય જૈન ગ્રંથમાલા"** નું નામ લેવામાં આવ્યું છે, તે ગ્રંથમાલાએ જે કાંઇ કામ કર્યું છે, તે કોઇથી અજાણ્યું નથી. યદ્યપિ આચાર્યશ્રીની છેલ્લા સમયની માંદગી અને સ્વર્ગવાસ એ કારણોએ આ ગ્રંથમાલાને ઘણી મંદ ગતિવાલી બનાવી દીધી છે, તોપણુ અત્યાર સુધીમાં તેમાં સંસ્કૃત, હિન્દી અને ગુજરાતી ભાષાનાં લગભગ જે ૧૦૦ ગ્રન્થો પ્રકાશિત થયા છે તેનું મહત્વ તેજ સમજી શકયા હશે કે જેમણે તે ગ્રન્થો જોયા હશે કિંવા તેનો અભ્યાસ કર્યો હશે.

યદ્યપિ છેલ્લા કેટલાક સમયથી કેટલીક જૈન સંસ્થાઓએ સારી સંપત્તિ સાથે પ્રાચીન ગ્રન્થો બહાર પાડવાનું કામ આરંભ્યું છે. અને તે સારી પ્રગતિમાં ચાલી રહ્યું છે, તોપણુ આ ગ્રન્થમાલાએ, જ્યારે સૌ નિદ્રામાં હતા ત્યારે જાગૃત થઇને વ્યાકરણુ, કાવ્ય, કોશ અને નાટકના ગ્રંથો બહાર પાડી જૈન સાધુઓને અભ્યાસની સરળતા કરી આપવા સાથ જૈન સાહિત્યના ખજાનામાં પણુ આવો સુન્દર ખોરાક અખૂટ ભરેલો છે એવું બતાવી આપવાનો જે પ્રાથમિક યશ આ સંસ્થાએ લીધો છે, તેને આપણે કદી પણુ ભુલી ન શકીએ. "વિશેષાવશ્યક" જેવા મહાન ગ્રન્થને, ગ્રન્થને નહિ કિન્તુ, જૈન સાહિત્યના ખજાનાને બહાર પાડવાનું સૌભાગ્ય આ સસ્થાનેજ પ્રાપ્ત થયું છે.

આ ઉપરાંત હિન્દી અને ગુજરાતી ભાષાના જે જે ગ્રન્થો આ સસ્થામાં પ્રકાશિત થયા છે,

તેનું મહત્વ પણ કાંઇ ઓછું નથી. એક ભાષાનો જૈન ગ્રન્થ કોઇ વિદ્વાન લખે અને તેને કોઇ સંસ્થા પ્રકાશિત કરે તો તેની કૉપિઓ વર્ષોસુધી કબાટમાં સડવા છતાં તેનો કોઇ આદર ન કરે. સમાજની આવી સ્થિતિમાં આ ગ્રન્થમાલામાં પ્રકાશિત થએલા હિન્દી અને ગુજરાતી ગ્રન્થોની એક એક નહિ કિન્તુ ચાર ચાર પાંચ પાંચ કે તેથી વધારે આવૃત્તિઓ બહાર પડયાનું આપણે જોઇ શકીએ છીએ. આ બધું શું બતાવે છે ? તે ગ્રંથોનું મહત્વ કે બીજું કાંઇ?

ગ્રન્થ લેખન—

આચાર્યશ્રીએ માત્ર જુના અને નવીન ગ્રંથો પ્રકાશિત કરીનેજ સમાજ ઉપર ઉપકાર નથી કર્યો; તેઓ, પોતાની વિદ્વત્તાના ફળ રૂપે એક વિશાળ સહિત્યનો ફાળો આપણને વારસામાં પણ આપી ગયા છે. અનેકાનેક પરોપકારની પ્રવૃત્તિઓમાં રાત દિવસ ગુંથાએલા રહેવા છતાં, સંખ્યાબંધ ગ્રન્થો લખવાનો અને તે પણ સર્વસાધારણને ઉપયોગી થાય તેવા ગ્રન્થો લખવાનો ભગિરથ પ્રયત્ન સુરિજી કરતા હતા અને તેનાજ પરિણામે સુરિજીના બનાવેલા અને સંશોધિત કરેલા લગભગ બે ડઝન ગ્રન્થો પ્રસિદ્ધ અને અપ્રસિદ્ધ આપણી સામે મૌજુદ છે જેમાંના મુખ્ય આ છે—

૧ જૈન તત્વ દિગ્દર્શન
૨ જૈન શિક્ષા દિગ્દર્શન
૩ પુરૂષાર્થ દિગ્દર્શન
૪ અહિંસા દિગ્દર્શન
૫ ઇન્દ્રિય પરાજય દિગ્દર્શન
૬ આત્મોન્નતિ દિગ્દર્શન
૭ બ્રહ્મચર્ય દિગ્દર્શન
૮ ગુરૂ તત્વ દિગ્દર્શન
૯ ધર્મદેશના
૧૦ ગૃહસ્થ ધર્મ
૧૧ દેવ દ્રવ્ય સંબંધી મારા વિચારો
૧૨ મહાવીર સ્વામિને અપીલ
૧૩ પ્રશ્નોત્તર સંગ્રહ
૧૪ દેવકુલ નાટક
૧૫ ઐતિહાસિક રાસ સંગ્રહ ભા—૧
૧૬ ,, ,, ,, ભા—૨
૧૭ ,, ,, ,, ભા—૩
૧૮ ઐતિહાસિક પ્રાચીન તીર્થમાલા
૧૯ યોગશાસ્ત્રનું સંશોધન નોટ્સ સાથે
૨૦ પ્રમાણ પરિભાષા (સૂત્ર રૂપે)
૨૧ જૈન તત્વજ્ઞાનમ્
~~૨૨ મેસોની રીલીપીના~~ આક્ષેપોનો જવાબ-(ઇંગ્લીશ)

આ ઉપરાંત તેઓશ્રીના લખેલા સામાજિક ધાર્મિક અને ઔપદેશિક લેખોનો એક ઢગલો તેમના સંગ્રહમાં મૌજુદ છે, જે પ્રકાશિત થાય તો જૈન સમાજ ઉપરજ નહિ, દુનિઆની આખી જનતા ઉપર મહાન ઉપકાર થાય તેમ છે.

સુરિજીના ગ્રન્થોનું મહત્વ કેટલું ? એનું અનુમાન હું ન કરી શકું. એ તો એક અભ્યાસક દૃષ્ટિએ તે ગ્રન્થોનો ઉંડો અભ્યાસ કરનારજ કરી શકે તેમ છતાં તેમના જૈન ગ્રંથો પ્રજાજ નહિ—જૈનેતર પ્રજા વાંચે, સ્કૂલોમાં અને કોલેજોમાં એ ગ્રન્થોનો આદર થાય, તે ગ્રંથોની ચાર ચાર પાંચ પાંચ આવૃત્તિઓ ઉપરા ઉપર બહાર પડે, જુદી જુદી ભાષાના વિદ્વાનો પોતપોતાની ભાષામાં તે ગ્રંથોને દેખતાનીજ સાથેજ અનુવાદો કરવાને અને બહાર પાડવાને લલચાય; આ બધી બાબતો ઉપરથી તે ગ્રંથોનું કાંઇક અલૈકિક મહાત્મ્ય હોવું જોઇએ એ તો ખરૂંજ.

ઉપરના ગ્રંથોમાં "અહિંસા દિગ્દર્શન" "ઇન્દ્રિય પરાજય દિગ્દર્શન" આદિ કેટલાએ ગ્રંથોની ઉપર કહેવા પ્રમાણે આવૃત્તિઓ નીકળી ચુકી છે. અને અનેક ભાષાઓમાં અનુવાદો થયા છે. હું ભુલું છું ! આચાર્યશ્રીની "ધર્મદેશના" એ જર્મનના વિદ્વાનોને પણ લલચાવ્યા છે. અને ત્યાંના વિદ્વાનોની પ્રેરણાથી એક વિદુષી બાઇ આ ગ્રન્થનો જર્મન ભાષામાં અનુવાદ કરે છે.

આ ઉપરાંત પદાર્થ વિજ્ઞાનિયોની કોન્ફરન્સમાં ડોકટર હર્ટલે થોડાજ વખત ઉપર "વિજયધર્મસુરિ અને તેમના ગ્રન્થો" એ વિષય ઉપર નિબંધ વાંચ્યો હતો.

ઐતિહાસિક પ્રવૃતિ—

ઇતિહાસ એ સાહિત્યનુ અગત્યનું અંગ છે. ઇતિહાસની સમૃદ્ધિ ઉપરજ કોઇ પણ જાતિ, દેશ, સમાજ વિગેરેની પરિસ્થિતિનું ભાન થઇ શકે છે. આચાર્યશ્રીએ પોતાની સાહિત્ય પ્રવૃત્તિમાં અગત્યના આ અંગને પણ વિસાર્યું નથી. તેમના સંશોધિત કરેલા "રાસ સંગ્રહ" ના ભાગો, "દેવ કુલ પાટક" જેવા ઐતિહાસિક નિબંધો અને તેમણે સંગ્રહ કરેલ પાંચથી છ હજાર શિલાલેખો અને પ્રાચીન ભંડારોની સર્વે કરીને એકત્રિત કરેલી હજારો પ્રશસ્તિઓનો સંગ્રહ, આ બધું તેમની ઐતિહાસિક પ્રિયતાને સ્પષ્ટ બતાવી આપે છે.

પાશ્ચાત્ય દેશોમાં પ્રવૃત્તિ—

આચાર્યશ્રીએ આ દેશમાં રહેવા છતાં અને અંગ્રેજીનું અક્ષરજ્ઞાન પણ ન હોવા છતાં પાશ્ચાત્ય દેશોના જિજ્ઞાસુ વિદ્વાનોને સાહિત્યનાં સાધનો પુરાં પાડી તેમની શંકાઓના સમાધાનો કરી જૈન સાહિત્યની જે પ્રવૃત્તિ વધારી છે એ કોઇને પણ આશ્ચર્ય ઉત્પન્ન કર્યા શિવાય રહે નહિ. તેમની પ્રવૃત્તિએ તો એવી શંકા કરનારાઓને કે "અમે સાધુ રહ્યા શું કરી શકીએ ?" "અમારાથી ક્યાંય જવાય નહિ અવાય નહિ" આવી સ્થિતિમાં દૂર દેશોના વિદ્વાનો સાથે કેમ સંબંધ જોડી શકીએ? સાહિત્યમાં તેમને આગળ કેમ વધારી શકીએ ? સચોટ જવાબ આપ્યો છે.

સાધુ આચારમાં રહેવા છતાં, ચોક્કસ મર્યાદામાં રહેવા છતાં વ્યાવહાર અને કાર્ય દક્ષ સાધુઓ શું કરી શકે છે ? એ સંબંધી વિજયધર્મસૂરિજીની આ પ્રવૃત્તિ ઉપરથી ઘણું જાણવાનું મળે છે.

આજથી ૧૦ યા ૧૫ વર્ષ ઉપર જર્મન, ઇટાલી, અમેરીકા, ફ્રેંચ, સ્વીડન, નોર્વે અને ઇગ્લેંડ આદિ પાશ્ચાત્ય દેશોમાં માત્ર ગણ્યા ગાંઠયાજ વિદ્વાનો જૈન સાહિત્ય સંબંધી કંઇક જાણતા હતા. થોડાકજ ગ્રંથો અનેક પ્રકારની ભૂલોવાલા તે દેશોમાં અનુવાદિત થયા હતા, પરંતુ વિજયધર્મસૂરિજીની અથાક પ્રવૃત્તિએ તે સ્થિતિમાં આકાશ—પાતાળ જેટલું અંતર કરી નાખ્યું છે. આ પ્રવૃત્તિનો ઇતિહાસ બહુ લાંબો થઇ શકે તેમ છે પરન્તુ તેટલા સ્થાન અને સમયના અભાવને લીધે વિશેષ વિવેચન કરવાનું મૂકી દઉં છું. અને ટુંકમાં એટલુંજ કહેવું આવશ્યક સમજું છું કે પાશ્ચાત્ય વિદ્વાનોમાં જૈન વિદ્વાનો ઉપર આચાર્યશ્રીએ થોડો ઘણો પણ ઉપકાર કર્યો છે અને જેઓ આચાર્યશ્રીને બહુ માનની દૃષ્ટિ જુએ છે તેઓમાંના કેટલાક પ્રસિદ્ધ આ પણ છે—

૧ ડૉ૦ હર્ટલ
૨ ડૉ૦ ફીનો
૩ ડૉ૦ જોલી
૪ ડૉ૦ ટુચ્ચી
૫ ડૉ૦ શ્યુબ્રીંગ
૬ ડૉ૦ મિસ ઝેનસન
૭ ડૉ૦ જેકોબી
૮ ડૉ૦ થોમસ
૯ ડૉ૦ ફીલીપ્પી
૧૦ ડૉ૦ હુલીશ
૧૧ ડૉ૦ મીરાનુ
૧૨ ડૉ૦ મિસ ક્રાઉઝ
૧૩ ડૉ૦ કોનો
૧૪ ડૉ૦ નોબલ
૧૫ ડૉ૦ લ્યુમન
૧૬ ડૉ૦ સ્વાલી
૧૭ ડૉ૦ કંફેલ
૧૮ ડૉ૦ ગ્લેસેનાપ્પ
૧૯ ડૉ૦ ફ્રેડેગોન
૨૦ ડૉ૦ નેગલીન
૨૧ ડૉ૦ સીલ્વન લેવી
૨૨ ડૉ૦ ઓટોસ્ટાઇન
૨૩ ડૉ૦ જાર્લકાર્પેન્ટીયર
૨૪ ડૉ૦ ઝીમ્મર
૨૫ ડૉ૦ બ્લુમફીલ્ડ
૨૬ ડૉ૦ પેરટોલ્ડ
૨૭ ડૉ૦ વીન્ડરનેસ
૨૮ ડૉ૦ એડગર્ટન

૨૯ ડૉ૦ મેરૂનઓસેબ

૩૦ ડૉ૦ જેચારીઆ વિગેરે વિગેરે

કાર્યને સમજનારી અને કદર કરનારી આ ગોરી પ્રજા આપણા આચાર્યશ્રીને ભુલી નથી અને ભુલતી પણ નથી. આચાર્યશ્રીના સ્વર્ગવાસથી આ વિદ્વદ્ મંડળીને જે આઘાત પહોંચ્યો છે તેનું અનુમાન આપણે તે ઉપરથી કરી શકીએ છીએ કે આચાર્યશ્રીના સ્વર્ગવાસ પછી યુરોપનાં અનેક પત્રોમાં તે વિદ્વાનોએ આ આચાર્યશ્રીના જીવન સાથે પોતાનો શોક પ્રદર્શિત કર્યો છે.

આચાર્યશ્રીએ તે પ્રજા ઉપર જે ઉપકારો કર્યા—બીજા શબ્દોમાં કહું તો સાહિત્ય અને જૈનધર્મ સંબંધી તેમને વાકેફ કર્યા, તેના બદલામાં તેઓ અનેક રીતે આચાર્યશ્રીનો અહેશાન માની રહ્યા છે. ઘણા વિદ્વાનોએ આચાર્યશ્રીના સ્વતંત્ર જીવનો લખ્યાં છે. પોતાના ગ્રંથો અને લેખોમાં પહેલી તકે આચાર્યશ્રીને સ્મર્યા છે, અને સ્મરે છે, આ એમની કૃતજ્ઞતાનેજ બતાવી આવે છે, જૈન સાહિત્યનો પાશ્ચાત્ય દેશમાં પ્રચાર થવાથી પાશ્ચાત્ય દેશના વિદ્વાનોમાં જૈન અને સાહિત્ય સંબંધી જે કાંઇ ભ્રમણાઓ હતી તે મોટે ભાગે દૂર થઇ છે એટલુંજ નહિ પણ ઘણા ઉચ્ચ કોટીના વિદ્વાનો જૈન સાહિત્ય અને જૈનધર્મ ને સર્વ શ્રેષ્ઠ માનવામાં લગાર પણ સંકોચ કરતા નથી. જર્મનની બર્લીન યુનિવરસીટીએ પિ. એચ. ડી ની ડીગ્રીમાં જૈન સાહિત્ય દાખલ થયું છે અને તેજ યુનિવરસીટીમાં આચાર્યશ્રીના પ્રયત્નથી ગુજરાતી અને હિન્દી ભાષા દાખલ થઇ છે. સેંકડો જૈન ગ્રંથોના અનુવાદો ત્યાંની ભાષામાં પ્રકાશિત થતા રહ્યા છે.

પાશ્ચાત્ય દેશોમાં જૈન સાહિત્યનો પ્રચાર થવાથી જે કાંઇ લાભો થવા પામ્યા છે તેમાંના થોડાકજ ઉપર પ્રમાણે બતાવ્યા છે.

નિબંધ યોજના—

આ દેશના અને પાશ્ચાત્ય દેશનાં વિદ્વાનોમાં જૈન સાહિત્યનો પ્રચાર વધેલો જોયા પછી, તેઓને એક બીજાના વિચારો જાણવા તક મળે, કયો વિદ્વાન પોતાના વિષયમાં ક્યાં સુધી આગળ વધ્યો છે? અને પોતપોતાના વિષયમાં તેમનો છેવટનો શો અભિપ્રાય છે એ જાણવામાં આવે એટલા માટે આચાર્યશ્રીએ પોતાના છેલ્લા સમયમાં તે વિદ્વાનો પાસે નિબંધો મંગાવવાની એક યોજના બહાર પાડી હતી. પરિણામે નિમ્નલિખિત નિબંધો આવ્યા હતા—

૧ "જૈન ધર્મનો અભ્યાસ" (જૈન આગમોમાંથી ટાંચન) લેખક—ડૉ૦ ઓટોસાઇન (પ્રાગ)

૨ "જૈન ધર્મની સમીક્ષા અને વિધાસંપતિ"
લેખક—ડૉ૦ જૉન નોબલ (બર્લીન)

૩ "જૈન ધર્મમાં ઇશ્વર સંબંધી વિચાર
લેખક—ડૉ૦ આ૦ પેરટોલ્ડ (પ્રાગ)

૪ "કર્મ ફીલોસોફી'
લેખક—પ્રો૦ વી૦ ફેડેગોન (હોલેન્ડ)

૫ "જૈન ધર્મમાં ઇશ્વરવાદ"
લેખક—એચ. વારન (લંડન)

૬ 'ભારતીય તત્ત્વજ્ઞાનના વિકાશમાં જૈન ધર્મનું સ્થાન" લેખક-હર્મન જેકોબી

૭ " જૈન સાહિત્યમાં રહેલા કેટલાક અહેવાલોની નોંધ."
લેખક—ડૉ૦ સ્ટેમ્હોનો (ક્રિયાનીઆનાવે)

૮ "બુદ્ધ અને મહાવીર"
લેખક—પ્રો. અર્નેસ્ટ લ્યુમેન (ફ્રીબર્ગ જર્મની)

૯ "ભારતીય સાહિત્યના ઇતિહાસમાં જૈનો"
લેખક—એમ વિન્ટરનીઝ (પ્રાગ)

૧૦ "જૈન ધર્મ અને બીજા ધાર્મિક સિદ્ધાન્તોનો સંબંધ"
લેખક-ડૉ૦ હેલમૌથ વોનગ્લેસનપ

૧૧ 'જૈન ખગોળ" ડૉ૦ ડબલ્યુ કીરફેલ (બોન, જર્મની)

૧૨ અધટની જૈન કથા ડૉ—મિસકઉઝ (લીપ્ઝીગ)

૧૩ શ્રી હેમચંદ્રાચાર્ય એક કોશકાર
લેખક—ડૉ—જેચરીલ (હેલે—જર્મની)

૧૪ જૈન પૂર્વ સાહિત્ય ડૉ—ડબલ્યુ—સ્યુબ્રીંગ (હેમ્બર્ગ જર્મની)

૧૫ એલ્બ્રેટ વેબર-યુરોપમાં જૈનત્વનો પ્રથમ પ્રચારક.

લે-ડૉ. હેન્રીચ ઝીમ્મર (હેડનબર્ગ-જર્મની)

૧૬ જૈન કાનુન. લે-ડૉ. જે. જોલી (જર્મની)

એતદ્દેશીય

૧૭ બુદ્ધસાહિત્યમાં જૈન ધર્મનો ઉલ્લેખ

લેખક-વિમલચરણ લૉ. એ. એમ. એલ. બી.

૧૮ જૈનો અને ક્રિયા વિધિ-રીતરીવાજ

લેખક-ડૉ. શ્યામશાસ્ત્રી (મ્હેસુર)

૧૯ જૈન દ્રષ્ટિએ ભારતીય ન્યાયનો તુલનાત્મક અભ્યાસ

લેખક-હરીસત્ય ભટ્ટાચાર્ય (હુગલી) M. B. B. L.

૨૦ તીર્થંકર લેખક-હીરાલાલ આર. કાપડીયા M. A. (મુંબઇ)

૨૧ જૈન કાનુન લેખક-જુગમંદિરલાલ જૈની M. A. (ઇંદોર)

૨૨ જૈન તત્વજ્ઞાન

લેખક-શીતલપ્રસાદ બ્રહ્મચારી)

પરંતુ દુઃખનો વિષય છે કે આચાર્યશ્રી આ યોજનાનાં પરિણામને પ્રત્યક્ષ જુએ, તે પહેલાં સ્વર્ગવાસી થયા છે. આચાર્યશ્રીને એક સાહિત્યની મૂર્તિ તરીકે કિંવા જઇનિ સાહિત્યના સાચા પ્રચારક તરીકે માનનારાઓનું એ કર્તવ્ય છે કે આચાર્યશ્રીની આ આંતરિક ઇચ્છા પૂર્ણ કરવાનો પ્રયત્ન કરવો જોઇએ.

ઉપસંહાર

આચાર્યશ્રીની સાહિત્ય પ્રવૃત્તિના અંગે જેટલું લખીએ તેટલું લખાય તેમ છે, પરન્તુ ન તેટલો સમય કે ન તેટલું સ્થાન. જેણે પોતાની જીવનના પ્રારંભિક ચોક્કસ વર્ષોને છોડીને આખી જીંદગી સાહિત્યની સેવામાંજ વ્યતીત કરી છે, જેણે જિન પ્રવચનને જગતનું સાહિત્ય માની સાહિત્ય મંદિરમાં દેશ કે જાતિ, ધર્મ કે સમાજ, કોઇ પણ જાતનો ભેદ રાખ્યા સિવાય એક સરખો સૌને આશ્રય આપ્યો છે, જેણે પરમાત્મા મહાવીરની ઉદાર ભાવનાને રૂધિર અને નસોમાં વહેતી કરી "સવી જીવ કરૂં શાસનરસી" એ ભાવનાને લક્ષબીંદુમાં રાખી જીવનની તમામ ક્રીયાઓનો વ્યવહાર ચલાવ્યો છે, એવા વિજયધર્મસૂરિજી આજ આપણી સમક્ષ નથી પરન્તુ તેમના કાર્યો અને ઉપકારો આપણી અને પાશ્ચાત્ય વિદ્વાનોની સમ્મુખ તરવરી રહ્યાં છે અને તેટલાજ માટે એમ કહેવું અત્યુક્તિ ભરેલું નથી કે-વિજય-ધર્મ સૂરી યશ! શરીરથી આપણી સમક્ષ-સંસારની સપાટી ઉપર ઉભાજ છે. આપણે જો તેમને કોઇ પણ અંશે ઓળખી શકયા હોઇએ તો તેમના પ્રત્યે આપણું એટલુંજ કર્તવ્ય છે કે આપણે તેમની ઉદાર ભાવનાને હૃદયમાં ઉતારવી અને તેમના જે જે કર્તવ્યો અધુરાં રહી ગયાં હોય તેને પૂર્ણ કરવા આપણાથી બનતો પ્રયત્ન કરવા ચુકવું નહિ જોઇએ.

પ્રાન્તે-તે મહાપુરૂષને માટે સંસારના મહાન વિદ્વાનોમાં નિમ્નલિખિત વિદ્વાનો જે સ્મરણાંજલીઓ અર્પિ રહ્યા છે તેમની સાથે અક્ષરશઃ મળતો થઇ મારા આ નિબંધને અહિંજ સમાપ્ત કરૂં છું.

(1)

O Brahman, if you want to see a real enbodiment of the ascetic ideal, then go to the great Vijaya Dharma.

O Kshatriya, if you look for a mighty Hero, I would name the great Vijaya Dharma, the conqueror of Raga (Attachment and love) and Dvesha (Repulsion and Hatred) the most powerful of Human enemies.

O Vaishya, if you like to see the Wealthiest man, stand before the great Vijaya Dharma who is possessed of "Right Faith," Right Knowledge," and "Right conduct"

the three priceless gems of purest ray serene.

O Sadra, if yon have not yet properly learnt what service is, then follow the great Vijaya Dharma, the truly humble and unselfish servant of Humanity.

Harisatya Bhattacharji,
M. A. B. L......
Bengal.

(2)

Shastravisharad Jainacharya Shri Vijaya Dharma suri fulfilled in our day an old Indian ideal of a great man. Having secured the mastery of human passions, he was actuated by a selfless benevolence. Entirely loyal to the doctrines of his faith, he realized them with a philosophic insight. His teaching and preaching were invested with reasonableness and sweetness, while his advanecs to members of other sects, countries and cultures were characterized by an unfeigned all that were around Him; warming all creatures by the pure and self denyiug love, the all embracing compassion of his noble heart, elucidaing the spheres of his ethic and scientific adivity by the bright beams of his dear mind, of His refined and harmonious erudition.

To those, however, who are far from him, separated by space and time. His noble life is like a calm and splendid gunding star, which, out of this stormy sea of harted and depravity, of deep calamity and grief, directs our poor and vexed looks upwards to hegihts of eternal harmony, the harmony which was all over His great and divine personality, the harmony which governs the universe, and which all creatures long for friendliness. His exertions in the cause of education, and his constant per-occupation with plans for the foundation of enstitution, and the publication of periodicals, texts and studies revived and invigorated his community. His example, which was an inspiration to his contemporaries survives as an inheritance to his successors.

Dr. F. W. Thomas,
London.

(3)

Veneration to the Divine saint, to whom this tempal is hallowed! Veneration to Shri Vijaya Dharma Suri, the benefactor of mankind, the promoter of humanity and science!

His earthly life was like a calm and splendid flame, warming and elucidating Veneration to Shri Vijaya Dharma Suri, the benefactor of mankind, the promoter of humanity and science.

Dr. Ch. Krause,
Leipzig.

લેખક:—રતિલાલ દીપચંદ દેસાઈ,
વિદ્યાર્થી, શ્રીવીરતત્ત્વ પ્રકાશક મંડળ-શિવપુરી.

अहिंसा धर्म ।

[लेखक पं०-शंकरलाल व्यास-कसरावद ।]

अहिंसा धर्म सब धर्म कर्मोंमें श्रेष्ठ है। इसकी महिमा सब शास्त्रकारोंने गाई है जिधर देखो उधर अहिंसा देवीकी आरती उतारी जारही है और सभी व्रत नियम इसीके आधारपर विश्राम ले रहे हैं। सभी हिन्दु धर्मावलम्बी इस अहिंसा धर्मका प्रतिपादन करते हुए उच्च स्वरसे "अहिंसा परमो धर्मः" श्रुति वाक्य गारहे हैं। जैनधर्मकी तो खास नींव ही अहिंसा धर्मपर उठी हैं।

जितनी ख्याति जैन धर्मने अहिंसा धर्मपर पाई है उतनी किसी भी धर्मावलम्बीको आज-तक प्राप्त नहीं हुई। अहिंसाव्रत जैसा व्रत नहीं परन्तु खेद है कि हम लोग जान बूझकर भी इस व्रतका पालन नहीं करते। देवी जगदम्बा है तो जगतके पशुओंकी भी माता है और माता सदा पुत्र वत्सला होती है। फिर माताके सामने पशुओंको सुख मिलना चाहिये या उनका वध?

आज बम्बई, कलकत्ता, करांची, मद्रास आदि बड़े २ शहरोंमें गौवध होरहा है। बिचारे उन छोटे २ पशुओंकी तो बात ही दूर है जिस समय भगवान बुद्धने यज्ञशालामें वध होनेवाली बहुतसी भेड़ें जाती हुई देखीं तो उन्हें एक लंगड़ी भेड़ दिखाई दी उसे देखकर भगवान बौद्धने उस भेड़ हांकनेवालेसे पूछा कि अरे भाई! इस लंगड़ी भेड़को क्यों कष्ट देता है। यदि इसे अपने कंधेपर रख ले तो कितना आनंद प्राप्त हो? इस पर उत्तर मिला, अजी यह सबकी सब यज्ञशालामें वध (बलिदान) की जायगी थोड़े समयके लिये इनपर दया हमने की भी तो किस उपयोगकी? इस निर्दयता पूर्ण वाक्य को बुद्धजीने श्रवणकर उस लंगड़ी भेड़को अपने कंधेपर रखके उन भेड़ोंके साथ ही साथ चले और जिस राजाके यहां बलिदान होता था वहां जाकर उस राजाको अहिंसा धर्मपर बहुत कुछ उपदेश किया।

कोटि धन्यवाद उस कुदरतको है जिसने ऐसी २ मोक्ष आत्माएं उत्पन्न कीं जो संसारका यथा समय उद्धार करती हैं।

इस समय देशकी दशा बड़ी शोचनीय हो रही है लाखों गौवे वध हो रही हैं। देश रसातलको चला जा रहा है।

महात्मा गांधीजी कहते हैं-भारतकी सच्ची सम्पत्ति अगर है तो एक मात्र गौ है।

पहिले जमानेमें राजाओं तथा ऋषिमुनियोंके यहां गौरूपी ही धन श्रेष्ठ माना जाता था तभीसे कहावत चली है कि भारतमें घी दूधकी नदियां बहती थीं और भारत समृद्धिशाली गिना जाता था। भगवान श्री कृष्णजीके समय बाबा नंदजीके यहां नौ लख गौवे थे तब ही तो इस देशके वासी सुखी थे।

बहुत समय की बात जाने दीजिये। मुसलमान बादशाहोंके वक्त भारतवर्षमें चीजोंका भाव कितना सस्ता था जिससे आज सुनते ही दांतों तले उंगली दबानी पड़ती है तथा कई २ महाशय तो गप्प ही जानेंगे। सुलतान अलाउद्दीन खिलजीके जमानेमें घी आधे पैसेका एक सेर और सुलतान फिरोज तबलखके वक्तमें दश पैसेका

एक सेर, तब सुलतान इब्राहीम लोदीके वक्त एक रुपयेका पांचसेर था। इसी प्रकार अकबरबादशाहके वक्त आठआने मन गेहूं, चावल दो रुपये मन, दाल छ आने मन, गुड़ देढ़ रुपये मन, नमक डेढ़ आने मन आदि। मतलब कि उस जमानेमें सब वस्तु सस्ती थी। जहांपर बादशाहके समय एक युरोपियन बिलायतसे हिन्दुस्थान आया था वह लिखता है कि यहां एक आदमी एक आनेमें अपना उदर पोषण करता है।

इसी प्रकार धीरे धीरे वस्तुओंका भाव बढ़ता गया और आज यहां तक नौबत आ पहुंची कि एक मनुष्य अपना गुजर दस रुपयेमें मुश्किलसे करता है। घी छ छटाक एक रुपयेका बिकता है। पाठको! यह सब गौ वधका ही कारण है इस लिये गौरक्षा करना हिन्दु मात्रका परम कर्तव्य है। भगवान कृष्ण गीतामें वैश्योंके कर्म बताते हुए कहते हैं—

कृषि गौरक्ष वाणिज्यम् वैश्य कर्म स्वभावजम्। कृषि गौरक्षा और वाणिज्य ये तीन वैश्योंके कर्म हैं। इन तीनों पैकी वाणिज्यका मूल कृषि तथा गौ रक्षा है और दोनोंमें भी कृषिका मूल गौरक्षा है।

मूलो नास्ति कुतः शाखा। जब मूल ही न रहेगा तो छिन्ने मूले नैव शाखा व पत्रम् शाखा और पल्लव रूपि खेती (कृषि) और वाणिज्य कहां रहेंगे। जब वैश्योंकी अवनति हुई तो ब्राह्मण क्षत्रीय किस तरह बच सकेंगे इस लिये देशकी अवनतिका कारण गौ सेवाका न होना ही है।

आजकल बड़े २ सेठ साहुकार वकिल बैरिष्टर जमीदार मुंसिफ जज्ज आदि गृहस्थोंके यहां अवलोकन कीजिये दस दस पांच पांच घोड़े बन्धे मिलेंगे। अगर यह नहीं तो दो चार बकरी तथा कुत्ते तो अवश्य मिलेंगे परन्तु गौका पता नहीं। यदि उन्हें गौ पालनके विषयमें प्रश्न किया जाय तो यह कहके टाल देते हैं कि हमें गौ पालनेका शौक नहीं। हाय भारतवर्ष! तेरे श्रीमंत पुत्रोंके यहां सैकड़ों गाड़ी घोड़े मोटरें तथा साइकलें रखनेके लिये स्थान परन्तु जो अनेक रोगोंसे बचाती हैं, शरीरको बलिष्ट करती हैं, बुद्धिको बढ़ाती हैं ऐसी गौ माताके लिये स्थान नहीं। अफसोस! सद् अफसोस!!

जिस भारतमें कृष्णजीसे योगी गौ सेवा करते थे, उस भारतमें सभ्यताकी डींग मारनेवाले बड़े २ पदाधिकारी कुत्ते बिल्लियोंकी सेवा भले ही करलें परन्तु गौ माताकी सेवा कदापि नहीं करेंगे। क्योंकि अभी भारतीय बन्धुओंका ध्यान गौ सेवाकी ओर विशेष नहीं लगनेका कारण यही है कि उसके दुधके लाभोंपर अभी वैज्ञानिक रूपसे दृष्टि नहीं गई है। इसके अतिरिक्त गोसे भारत नहीं बल्कि सारी सृष्टिका उपकार होता है गौमाता तृण भक्षण करके दुध उत्पन्न करती है। दुधसे घृत और घृतसे यज्ञ तथा यज्ञसे मेघोत्पत्ति होकर वृष्टि होती है। वृष्टिसे अन्न पेदा होता है जिससे सारा संसार पलता है इसलिये गीतामें कहा है कि—

यज्ञाद्भवति पर्जन्यो पर्जन्यादन्नसंभवः

पहिले जमाने जैसे अब यज्ञ होकर वायु शुद्धि दूर रही परन्तु चुरुट बिड़ी हुक्का तथा मीलोंके धुएंसे ऐसी वायु बिगड़ती है कि प्लेग

हैजा एन्फ्लूएंजा आदि बिमारियोंके मारे भारतवासियोंके नाकमें दम है। इस साल पंजाबमें प्लेग तो गत साल बंगालमें हैजा, किसी साल सी. पी.में तो किसी साल बंबईमें यों क्रमानुसार कहीं न कहीं रोग बना ही रहता है।

इसका कारण यज्ञका न होना ही है और यज्ञ तब ही हो सकेंगे जब गौ सेवा अच्छी प्रकार होगी—

अकबर बादशाहके समय नरहरि कविने एक मर्मभेदी तथा चित्ताकर्षक युक्ति की थी उसे सुनके बड़ा हर्ष होता है।

अकबरबादशाहके समय मुसलमान बहुत गौ बध करते थे उसे बंद करानेके लिये नरहरि कविने बहुतसी गौवोंका टोला एकत्रित किया और उन सब गौवोंमें जो एक सुंदर गौको आगे कर उसके गलेमें एक ताम्रपत्र बांधकर दरबारमें वह टोला पेश किया। जब बादशाहने बहुतसी गौवें दरबारमें लानेका कारण नरहरि कविसे पूछा तो कविने कहा, जहांपना यह गौवें आपसे कुछ प्रार्थना करना चाहती है और वह प्रार्थना इस ताम्रपत्र पर लिखी हुई है उसे मैं सुनाता हूं—

अरिहंत तृण गहहिं, ताहि जग मारत नहि कोई।
हम संतत तृण चरहिं, बचन उचरहिं दीन होई।
अमृत पय नहिं सुवहिं, बासमहि थंभन जावहिं।
हिन्दु हि मधुर न देतहिं, कटु तुरकहिं न पियावहिं।
नरहरि सुन शाह अकबर विनवत गौ जोरे करन।
कि हिं अपराध मारियत मुंहि, मुए हुं चाम सेवत चरन।

अर्थात शत्रु दांतोंमें तृण दबाकर जब शरण आता है तब उसे कोई मारता नहीं इस लिये जहांपना! हम गरीब गौवें तो दीन रात मुंहमें तृण लिये शरण चाह रही हैं सिवाय अमृत समान दूध तथा बछडे देकर जनताका उपकार करती हैं तथा हममें यह पक्षपात नहीं कि हिन्दुको अमृत तुल्य दुध दें और यवन हमें मारते हैं अतः उन्हे विषयुक्त, हम तो सबको समान ही दूध देती हैं इस पर हमें क्रूर कसाई मारते हैं यह सुन बादशाहने गौ बध रोक दिया था।

प्यारे भारत वासियों! गौ बध बंद करवानेके लिये तनमन और धनसे तैयार हुजिये क्योंकि उसके अमृत समान दुधसे शरीर बलिष्ट होकर आत्म बल बढ़ता है पर इस समय ऐसे अमूल्य पदार्थ दुग्धपानको छोड़कर चाह, सोडा वाटर, लेमन आदि वस्तुओंका सेवन करने लगे हैं जिससे धर्मभ्रष्ट होनेके साथ २ शारिरिक हानि होती है अतः गौरक्षा कीजिये तथा अहिंसा व्रतको पालते हुए छोटे २ जीवोंपर भी दया करो। किसीको मत सताओ। हमारे कइ सेठ साहुकार बडे अहिंसा व्रती होकर भी गरीबोंके गले कलम रूपी छुरीसे तरासनेमें कुछ भी कसर नहीं रखते। यह भी एक बड़ीसे बड़ी हिंसा है। अहिंसाका मतलब है किसी जीवको न सताना एतदर्थ मेरे निवेदनको पाठक हृदयमें स्थान देंगे।

शांति! शांति! शांति!

नीतिरत्न—माला—४.

निर्बलको बल भूप है, रोदन बल तिय जान
तस्करबल अनृत बचन, शठबल मौन बखान ७६
यथोक्त वादिनिरहहि क्षमी, वाक्पटु शौर्यवान
बहु श्रुतज्ञ परचित्तगत, दूत श्रेष्ठ पहचान ७७
अलोभि प्राज्ञ स्वामी भगत, वाक्पटु लेख प्रवीन
सतवादी जो सो करो, भांडा गारि कुलीन ७८
प्रहेलिका-दूरगामि किंतु अपद, साक्षर नहीं विद्वान
अमुख किंतु वक्ता स्फुट, कहो नाम मतिमान ७९
पर पद न्यास सुवर्णमय, सरसा सालंकार
पुन्य हीनको नहीं मिलै, अर्था वा इम नार ८०
कविता वनिता सोहिवर, श्रवण दरश मिसहोत
प्रफुलित चित मन सरलता, तरल शांति उद्योत ८१
विनय अहिंसा निष्कपट, तप सुशीलता ज्ञान
इन गुण विन केवल पठित, संज्ञा धर विद्वान ८२
शास्त्र अरथको पठनकर, करहु क्रिया निज योग्य
चिंतत औषध रोगिको, करै नहीं आरोग्य ८३
यथा हृदय बाचा तथा, बाचा बत कर तेम
मनसा बाचा कर्मणा, एक रूप सुधि नेम ८४
आन न पद्मदलाकृति, चंदन सम हिमवान्
हृदय क्रोध संयुक्त ये, लक्षण धूर्त बखान ८५
श्लेषम दुर्जन दुहुनकी, कैसी प्रकृति साम्य
मधुतें कोप करैं द्विगुण, कटुतें होवैं शाम्य ८६
मनोरथ निरधन पुरुषके, उठ २ होंय विलीन
दग्ध बाल वैधव कुचा, जिम उवि होंय मलीन
विद्या मित्र प्रवासिको, भार्या मित्र गृहस्थ
धर्म मित्र मरणोन्मुख, औषध मित्र अस्वस्थ ८८
पराश्रित निर्दयि धैर्यगत, चिंतित क्रोधित और
लोभ रहित ये षष्ठ जन, रहैं दुखी सब ठौर ८९

उन्मत कामी मद्यप, क्षुधित तृषित कोपिष्ट
कायर लोभि न जान हैं, निजपर इष्ट निष्ट ९०
बहुत लोभमें निंद है, बहुत बाद अपमान
बहुत दानतें निरधना, बहुत मौन अज्ञान ९१
पितु विधो माता निधन, मानव और अहार
बांधव कुल वर इच्छवै, कन्या रूप अपार ९२
कुल विद्या वय शील धन, अवस्थारूप रु देश
देखि श्रेष्ट दो कन्यका, चाहो सुख अशेष ९३
अक्षत मारग मत चलो, हास्य युक्त बच भास
नष्ट पदारथ शोक नहिं, स्वतः न गुण परकास ९४
श्रृंगी दंती अरु नखी, दुर्जन जान पुमान
नारि नदी अरु कूरको, करो विश्वास न कदान ९५
गाडीसे पन हाथके, घोट कसे दश हाथ
हस्तीसे सौ हाथके, दूर चलो नहिं साथ ९६
गुरू बली व्याधित मृतक, भूप श्रेष्ठ गुणवान
बाहन युत इनके लिये, देहु मार्ग धीमान ९७
शत्रु कामद नारि जित, अधनी नितऋणवान
याचक अरिवश पुरुष सो, जीवित मृतक समान ९८
आश्रित बन्धु मित्र जन, कवी गुरू हितकार
नारी भिक्षुक मूर्ख सों, करो न बाद विचार ९९
हो असहायक निरबली, करै बलीसों रार
कामी तस्कर धन क्षयी, नशै सुनिद्रा च्यार १००
द्रव्य सम्मती बाहुबल, बंधू धी बलमान
मानव बल ये पञ्चधा, धी बल सर्व प्रधान १०१
मैत्री हूं अनैक्यता, पर प्रहार संहार
ये गुण तिष्टें जाससो, मंत्री श्रेष्ठ विचार १०२
बालक राजा तिथ प्रबल, कपटी संग प्रसंग
जहां तहां सो दुख लहैं, जेम अपांख विहंग १०३

अग्नि ।

(लेखकः—बाबू ताराचंद जैन-झालरापाटन सीटी)

मैं क्यों जलूं ? जगतमें विशालकाय गजेन्द्रसे लेकर अति सूक्ष्म अमीबा तक समस्त प्राणी स्वार्थके अर्थ प्रयत्न किया करते हैं। मुझे इस आत्म दहनसे क्या लाभ ?

ब्राह्मण मुझे गुरु मानते हैं। परन्तु काम लेते हैं सेवक या दूतका। यज्ञमें मेरे द्वारा देवों और देवताओंको बलि पहुंचाई जाती है, मन्दिरोंमें धूप जलाके देवस्थानोंमें सुगन्ध विस्तीर्ण करनेका काम मेरे सिर रक्खा जाता है और घरमें रसोई मेरेसे पकाई जाती है। यह है गुरु भक्तिका नमूना ! हिन्दू मुझे स्वयं पवित्र और पवित्रक बतलाते हैं। और इस कारण मेरी और मेरी मिट्टीकी बड़ी दुर्दशा की जाती है। मृतक देहसे मुझे छुआते हैं और मेरी राखको विष्ठा पर डालते हैं या झूठे बर्तन साफ करनेमें काम लाते हैं। भला यह भी कोई आदर है ? पारसी मेरी पूजा करते हैं। वे मेरे सेवक कहाते हैं। परन्तु वास्तविक दृष्टिसे देखा जाय तो मुझे प्रतिदिन २४ घंटे और सालभरमें ३६९ दिन २९ घंटे उनकी चाकरी करनी पड़ती है। ये जो ताता आदिके मिल चल रहे हैं वे मेरे ही तो कारण हैं। इनमें मुझे प्रति दिवस विवश होके सहस्रों निरपराध धातुओंका विच्छेदन करना, उनको गलाना जैसे अनेक क्रूर और भीषण कर्म करने पड़ते हैं। क्या यही देव भक्ति है ?

अंग्रेजी पढ़े लिखे बाबू और उनके अनुयायीगण सिग्रेटोंको जलाकर धूम्रपान कर मेरी इज्जत तीन कौड़ीकी कर देते हैं। तमाखुरात्रके प्रेमी मेरी देहको गलीच कर डालते हैं। यह अपमान नहीं तो क्या है ?

कविगण और दार्शनिक पंडित मेरी क्रोधसे उपमाकर मुझे बदनाम करते हैं। परन्तु क्या वास्तवमें मैं बुद्धिहीन और क्रोधी हूँ ? वसुंधरा पहले ममयय थी। यदि मैं दयाकर ठंडा नहीं होती तो ये गगनस्पर्शी हिमशिखर और शान्त शीतल विस्तीर्णाम्बुधि कहांसे आते ? यदि मैं गंभीर और अप्रवेश्य और भयंकर काननोंको भस्मीभूत नहीं करती तो ये मनोरम पुरियें और हरे २ धान्य क्षेत्र अस्तित्वमें कैसे आते ? और ये बहु मूल्य और उपयोगी धातुओंकी खानें कहां मिलतीं ? पृथ्वी और सूर्यकी उष्णतासे ही अखिल प्राणी जगत प्राणको धारण कर रहा है। क्या यह मेरे विना संभव होता ? अपार शक्ति रहते भी जन्तुजनित अपमानको धैर्य्य और शांति पूर्वक सहती हूं। क्या यह क्रोधीका लक्षण है ?

हाँ तो क्यों मैं इस दुःखदाता संसारके उपकारार्थ अपने आपको नष्ट करूँ, इन कृतघ्नोंके लिए अपने आपको जलाऊँ ?

शीतार्त दीन जन सप्रेम मेरा आव्हानन करते हैं। क्या मुझे इनकी प्रार्थनाको अस्वीकार करना उचित है ? जब बिम्बोष्ठी चन्द्रमुखी कोमलांगी युवतियें चूल्हा जलाते समयकर पल्लवोंमें पंखा लेकर या सुगंधित श्वाससे सुगंधित कर अश्रुपूरित कमल नेत्रोंसे मेरी ओर देखती

हैं तब उन्हें पतिदेवके कट्रक्ति कष्टानुपरित कोपसे बचानेके लिए स्वप्राणोत्सृजन कर देना क्या कोई बड़ी बात है ? क्या प्राण भिक्षुक संसारको मरने देना चाहिये ? नहीं, कदापि नहीं।

परोपकार मेरे कुलका धर्म है। लकड़ियें मेरी जननी हैं और अनिल मेरा प्रिय सखा। लकड़ियें धीर, वीर, महात्मा, दानी और सतत परोपकारी तरुवरोंसे उत्पन्न होती हैं। भला मैं ऐसे उच्च और निस्वार्थ वंशमें जन्मले कर परहित विमुख होकर स्वार्थकी ओर क्या ध्यान देने लगूं। क्या कुलको कलंक लगाना पूर्वजोंके निर्मल धर्मको जलांजलि देना उचित्त है ?

अच्छा आत्म विनाशसे मुझे क्या लाभ ? देखो जबतक मैं सुस्त रहती हूं तबतक मृतप्राय: किसी कोनेमें पड़ी रहती हूं। न तो मुझमें कोई तेज ही रहता है और न कोई विक्रम ही। स्वधर्मकी उपेक्षा करनेसे मेरी सारी देह काली रहा करती है। मेरा नाम होता है कोयला। भला यह भी कोई जीवनमें जीवन है।

परन्तु जहां स्वधर्मको ग्रहण किया कि मेरी दशामें विचित्र परिवर्तन हो जाता है। मैं मृतशय्यासे जीवित हो उठती हूं। मेरी देह स्वर्णसे अधिक सुन्दर हो जाती है और उससे तेज और प्रकाशका मानों फौवारा छुटने लगता है। दीन और अदीन, धनी और निर्धन, सब मेरी शरणमें आते हैं और सुख प्राप्त करते हैं। उन्हें सुखी देखकर मेरा उत्साह दुगना हो जाता है और मारे प्रसन्नताके मैं लाल हो उठती हूं। मेरी निर्मल कीर्ति दशों दिशाओंमें फैल जाती है और मेरे नामका जयघोष विश्वभरमें गूंजने लगता है। मैं अमरत्वको प्राप्तकर लेती हूं। यह सब क्यों ?

स्वधर्म पालन कभी निष्फल नहीं जाता। सुकर्म कभी नष्ट नहीं होते। निस्वार्थसेवाका अद्भुत महात्म्य है। मैं जलती हूं, पर परोपकारके लिए जलती हूं।

जैनियोंके लिये–आकाशवाणी।

१–दिगम्बर श्वेताम्बर और स्थानकवासी मिलकर एक जैन विश्वविद्यालय (Jain University) की स्थापना करो जिसमें विदेशोंसे भी आकर विद्यार्थी लोग जैन धर्मकी शिक्षा प्राप्त कर सकें।

२–जैन सिद्धान्तोंका अंग्रेजी, जरमनी, चीन, जापानी आदि भाषाओंमें उल्था Translation कराकर लाखोंकी संख्यामें ट्रेक्ट छपवाकर विदेशोंमें वितरण करो। विदेशी विद्वानोंमें जैन धर्मका ज्ञान कराओ।

३–जैन ऐतिहासिक खोजके लिये एक विभागकी स्थापना करो।

४–बंगाल और बिहारकी सराक जातिका उद्धार करो, इस प्रान्तमें जगह जगह अध्यापक कायम करो और इन लोगोंमें अपने प्राचीनधर्मके ज्ञानकी प्राप्तिके लिये बंगालीमें ट्रेक्ट लिखाकर तकसीम करो। इस कार्यमें अपना पैसा लगाओ।

५–देशकी आवाजमें पूरा पूरा साथ दो।

अस्तित्वके युद्धमें विजय प्राप्त करो। साबित कदम खड़े होकर मैदानमें काम करो।

६ सार्वजनिक कार्योंमें आगे होकर भागलो। जैनपनके गौरवको बढ़ाओ। जैन धर्मके महत्वको सार्वजनिक बनाओ।

७ स्त्री समाजके अधिकारोंका गला मत घूंटो। स्त्री समाजकी उन्नति पर ही देशकी उन्नति निर्भर है।

८ बाल विवाह और वृद्ध विवाह आदि सामाजिक कुरीतियोंको आज ही अग्नि भेट कर दो।

९ वीर शासनकी जयजयकारसे वायुमंडलको गुंजा दो। सारे संसारमें अहिंसा धर्मकी पावन पताका फहरादो।

१० अपने अधिकारोंकी रक्षाके लिये प्राणोंकी परवाह मत करो। कायरताको छोड़ दो। जैन धर्म बनियों और कायरोंका धर्म बतलाया जारहा है। इस कलंकको सबके पहले धोकर जैनधर्मको वीरोंका धर्म होना साबित कर दो। जैनधर्मकी विजयका डंका बजा दो। मुठभेड़के लिये धार्मिक भुजाओंको बलवान बना दो।

११ शादी गमी आदि अवसरोंपर लाखों रुपया ज्योनारों और फिजूल खर्चियोंमें न उड़ाकर जिनवाणीके प्रचारमें लगाओ, कौमकी विधवाओंकी दशा सुधारो, जातिके गरीब बालकोंकी शिक्षामें अपना द्रव्य लगाओ, देश और धर्मकी सेवामें पैसा खर्च करो।

मोतीलाल पहाड्या-कुराडी।

श्रुतपंचमी पर्व।

(१)

जिसके लिये हम वर्षभरसे, लौ लगाये आ रहे।
सत्कारकी तैयारियांकर, श्रेष्ट भाव उपा रहे॥
वह पर्व हमको मिल गया, इससे हमें कहना यही।
धन्य है दिन आजका, अरु धन्य यह विरिया सही॥

(२)

श्रुतपञ्चमी है नाम उत्तम, पर्व जैनी मात्रका।
सो आगया स्वागत करो, आया हुआ सत्पात्रका॥
मैं प्रथम ही इस बातका, तुमसे निवेदन कर चुकूं।
इन लेखनीको साम्हने रख, व्यान सारा कर सकूं॥

(३)

यह पर्व कबसे है शुरू, इस श्रेष्ठ भारतवर्षमें।
प्रचलित किया किसने इसे, उसको सुनो तुम हर्षमें॥
बीते वर्ष हज्जार दो, जबसे हुआ निर्वाण है।
कीना प्रकट मुनि पुष्पदंत, अरु भूतिबलि सज्ञान हैं॥

(४)

धवल-आदिक शास्त्रोंकी, मूल रचना उन करी।
जेष्ट शुक्ला पञ्चमीको, प्रथम स्थापन करी॥
साम्हने सब संघके अति, भावसे पूजा करी।
तबसे यहां इस पर्वकी, परभावना सबने करी॥

(५)

किन्तु यह लिखते मुझे, अफसोस होता है बड़ा।
और सुनते ही कलेजा, दहिल उठता है कड़ा॥
क्या शास्त्रोंका भाइयो, हमने किया सन्मान है।
क्या पूर्व ऋषियोंके बताये, मार्गका अनुमान है॥

(६)

अलमारियां हैं बंद जिनमें, शास्त्र बहुतक हैं धरे।
जिनमें हजारों छिद्र, चूहों दीमकोंने हैं करे ॥
मैंने स्वयं निज नेत्रसे यह, दृश्य देखा है सही।
किन्तु अब कुछ होरहा, उद्धार सो पूरन नहीं ॥

(७)

कारण प्रबल है एक हलका, जो सुनाऊं मैं तुम्हें।
किन्तु सुनकर शीघ्र ही, इस ओर आना है तुम्हें ॥
प्रेम विरोधी व्यक्तियोंने, काम है कैसा किया।
शास्त्र रख अलमारियोंमें, फिर नहीं दर्शन किया ॥

(८)

करते प्रकाशत हैं नहीं, अस करन देते हैं नहीं।
उन पूर्व ऋषियोंका परिश्रम, सफल करते हैं नहीं ॥
इत्यादि कारण हैं अनेकों, सो सुनाऊँ मैं कहा।
बस इसीसे जैन मारग, लोप होता जा रहा ॥

(९)

बन्धुओ ! यदि आप जो, उद्धार अपना चाहते।
तो जिनागम उन्नतिका, मार्ग क्यों न प्रसारते ॥
जो भक्त हो सच्चे श्री, जिनवानी माताके यही।
तो निज अंतम विनयपर, तुम ध्यान अपना दो सही ॥

(१०)

शिक्षा प्रचार अपार हो, यह भावना भावो सदा।
ज्ञानकी हो वृद्धि तुम-अज्ञान नहिं फैले कदा ॥
पाठशाला हैं खुले, अरु जो खुलें आगे कभी।
तन, मन, तथा धनसे, सहायक आप हो जाना सभी ॥

(११)

आपको यह ज्ञात, जिनसिद्धांतसे है हो रहा।
ज्ञान बिना यह जीव, जग जंजालमें फँस रोरहा ॥
ज्ञानसे दुख दूरकर बस, सार-सुख हासल करो।
प्रार्थना यह "प्रेम"की नित ज्ञानका आर्जन करो ॥

पं० प्रेमचंद पंचरत्न-भिंड।

दो शब्द।

(लेखक-श्री० जानकीबाई जैन, अमरा।)

सारे संसारमें यह बात निर्विवाद सिद्ध है कि जो कुछ पुरुषार्थ कर सक्ता है वह कोई नहीं कर सक्ता क्योंकि मानवमें शक्तिकी आवश्यकता है। शक्तिकी कहावत चरितार्थ है-जिसकी लाठी उसकी भैंस, सो वर्तमानमें प्रत्यक्षमें दिखलाई पड़ रही है।

इस लिये प्रत्येक पुरुष स्त्रीको चाहिये कि पुरुषार्थके लिये उपाय करें और पुरुषार्थ जब होगा तब आपका शरीर निरोग हो, शरीर निरोगसे यथार्थ अध्ययन हो और अध्ययनसे ही अपने परायेका ज्ञान हो, ज्ञान होनेसे ही हम कुछ कर सकेंगे इस लिये सबसे पहिले अपनेको निरोग, साहसी, उद्यमी, परिश्रमी, धीर, बलवान बनावें नहीं तो याद रक्खो संसारमें आपको पैर रखनेको स्थान न मिलेगा। इसलिये शीघ्र ही अपनेको सम्हालो और बलवान बनो निर्बलों और कमजोरोंका जमाना नहीं है। अगर मेरा वाक्य आप न अपनायेंगे तो सच समझो वह दिन जल्द आवेगा जिस दिन आपको कोई न पूछेगा। और रोग और कायरताके सदन बन जाओगे। प्यारे भाइयों! मेरा कहना अबसे इसलिये है कि आपने अपनेको विषयवासनाका लोलुपी भ्रमर बनालिया है उसीसे आप लोगोंकी गणना कमजोरोंमें होगई है। मैं आपसे ही नहीं कहती, सारे जैन समाजसे

कहती हूं क्योंकि मुझे सारा संसार ही प्रमेह धातु क्षीणता शैथिल्यता और तरह २के रोगोंसे ग्रसित दिखलाई पड़ रहा है। और वह मरज सैंकड़े पीछे नव्वे फी सदी पत्रोंके पढ़नेसे विदित होता है। इसीसे आप अपनेको सम्हालें और अपने वीर्यकी रक्षा करें। आप लोगोंने अपनी जिंदगीमें जो विना कारण वीर्योंका नाश किया है उसीसे आज सारा संसार नयेर रोगोंसे व्यथित हो रहा है। और उसके लिये किसीने आजतक कोई उपाय ही नहीं सोचा। याद रक्खो शीघ्र समल जाओ और अपने वीर्यको बचाओ नहीं तो कुछ दिनोंबाद निःसन्तान होकर पिताके अधिकारको लुप्तकर समाजका सर्वस्व नाशकर दोगे। अब आपकी सेवामें अगले अन्कमें वीर्य बचानेकी क्रिया और कुछ वैद्यक नुसखे तथा मानसिक व्यसन पर सेवामें पेषित करूंगी।

मेरे वचन अगर कुछ कटू लगे हों तो माफ करना। मैं आपकी भगिनी ही सच्चे दुःखसे देखकर लिख रही हूं।

વીસામેવાડાની પંચને વિનંતિ.

સોજીત્રેથી પાછા ફરતાં અમે ત્રણે એક વિનંતિ પત્ર પંચમાં વાંચવા માટે આપી આવ્યા હતા તે નીચે મુજબ હતું—

પરમસ્નેહી પરમ વિવેકી વીસામેવાડા ભાઇઓની પંચ સમસ્તને હમારો અત્રેથી જતા જતાં છેવટે વિનંતી કરતા જવાની અમને જરૂર જણાય છે કે ગઇ કાલની સભાના વિવેચનોથી આપ જાણી ગયા હશોજ કે આપને ત્યાં અનેક પ્રકારના રીત રીવાજો અતિ ઉત્તમ પ્રકારના અને વખાણવા લાયક છે છતાં પણ જાતિ ઉન્નતિના મૂળને કુંઠક રાફ્પ એવો એક બાળ વિવાહ એટલે બાળ સગાઇનો રિવાજ પ્રચલિત છે તથા વરકન્યા વચ્ચેનો ચાર વર્ષનો અંતર રાખવાનો ઠરાવ ઘણે અંશે પળાતો નથી એ વાત આપ સારી રીતે જાણો છો છતાં પણ તેનો અમલ થતો નથી તો આજે રાત્રે આપનું પંચ મળવાનું છે તે પ્રસંગે આપની પાસે આપના પંચને અમારી નમ્ર વિનંતી છે કે જે કંઇ આજ સુધી બનીગયું છે તે માટે કંઇપણ ઉહાપોહ ન કરતાં હવે પછી તે માટે ઓછામાં ઓછો એવો ફરજીઆત ઠરાવ તો અવશ્ય કરવો કે હવે પછી કોઇ પણ માબાપ કે વડીલ પોતાની છોકરીની ઉમર સાત વર્ષની થાય નહી ત્યાં સુધી તેની સગાઇ એટલે કે વીવાહ નજ કરે અને વરની ઉમર કન્યા કરતાં ઓછામાં ઓછી ચાર વર્ષ મોટી રાખે અને આ ઠરાવનો ભંગ કરે તો કન્યાવાળા પાસેજ ભારે દંડ લેવાની યોજના કરવી. જો કે અમે તો કન્યાની ઉમર ઓછામાં ઓછી દશ વર્ષની થયા સિવાય સગાઇ નજ થવી જોઇએ એવા દૃઢ નિશ્ચયવાળા છીએ છતાં પણ આપના પંચની આધુનિક સ્થિતિ જોતાં હાલ તુરત સાત વર્ષનો ઠરાવ કરવાને અમે ભલામણ કરીએ છીએ. આશા છે કે આપની પંચ આ વખતે આ બાબત અવશ્ય ઠરાવ કરશે કે જેથી અમો બધાનું આવવું સાર્થક ગણાય. પંચાયતી ફરજીઆત ઠરાવ વગર બાળ વિવાહ (સગાઇ) ની રૂઢી બંધ નહીં થઇ શકે એમ અમારૂં માનવું છે તેથીજ આવો પંચાયતી ઠરાવ કરવાની અમોએ જરૂર જણાવી છે. વીર સંવત ૨૪૫૦ વૈશાખ વદી ૭ રવેરે

આપના જાતિ સેવકો—

મુલચંદ કસનદાસ કાપડીયા.—સુરત

છોટાલાલ ઘેલાભાઇ ગાંધી—અંકલેશ્વર

છગનલાલ ઉત્તમચંદ સૈરૈયા—સુરત

આ વિનંતિ પત્ર વદી ૮ ની પંચમાં શેઠ જેસંગભાઇ ગુલાબચંદે વાંચી સંભળાવ્યું હતું જે સમયે એ બાબદ ચર્ચા ચાલી હતી પણ કંઇ ઠરાવ થયો નહોતો છતાં પણ આ વિષયે વીસામેવાડા નવયુવક ભાઇઓમાં બહુ ચર્ચા ઉત્પન્ન કરી છે અને ભવિષ્યમાં એ બાલ સગાઇનો રિવાજ બંધ થવાની ઉમેદ રાખી શકાય છે. સં.

ખડકની ચાર પાઠશાળા-ધોડાદરના સમાજ-સેવક મોડાસીયા ફતેહચંદભાઇ તારાચંદ જણાવે છે કે હાલમાં હું અમારી ચારે પાઠશાળાની પરીક્ષા લેવા ગયો હતો તેમાં તા૦ ૨૧-૨૨ મેએ **નવાગામ** ગયો ત્યાં ૭૦ વિદ્યાર્થીની હાજરીમાંથી ૫૨ પરીક્ષામાં બેઠા તેમાં ૪૮ પાસ થયા છે જે ઘણું સંતોષજનક છે. સભા ભરી ઉપદેશ આપ્યો તેથી ૫૦) ઇનામ ફંડમાં આવ્યા ને ૫૦) શેઠના મળી ૧૦૦) થયા તેમાંથી ૭૦) નાં પુસ્તકો ને ૩૦) રોકડા વહેંચ્યા. માસ્તરનો પગાર ચાર રૂપયા વધારવો પડયો છે. અત્રેની પાઠશાળા ઉત્તમ રીતે ચાલે છે પણ પૈસાની તંગી છે માટે તીર્થક્ષેત્ર કમેટીએ વધુ મદદ આપવી જોઇએ.

તા૦ ૨૩ મીએ નાગજીભાઇ સાથે છાણી ગયો. ૫૨ વિદ્યાર્થીમાંથી ૪૦ પરીક્ષામાં બેઠા જેમાંથી ૩૬ પાસ થયા. સભા ભરી ઉપદેશ આપવાથી ઇનામ ફંડમાં ૩૦) ઉપજ્યા ને ૨૬) શેઠ લલ્લુભાઇ લખમીચંદે આપ્યા જેમાંથી પુસ્તકો ને રોકડ ઇનામ વેંચ્યું. અત્રેના માસ્તરે વિશેષ ખંતથી કામ કરવું જોઇએ.

તા૦ ૨૪ મીએ દેવલ જઇ પરીક્ષા લીધી. ૩૨ માંથી ૨૮ પાસ થયા. ગામના ભાઇઓ તરફથી રૂ૦ ૨૮॥ ના પુસ્તકો વેંચ્યા તથા સંઘવી વીરચંદભાઇ તરફથી ૨૪) નું કાપડ વેંચાયું ને ઘડિયાળ ભેટ આપી. તા૦ ૨૫ મીએ **બાવલવાડા** ગયો. ૫૦ માંથી ૪૦ પરિક્ષામાં બેઠા તેમાંથી ૩૮ પાસ થયા. માસ્તર ઘણીજ ખંતથી કામ કરે છે. ઇનામ ફંડથી રૂ૦ ૨૨॥ ને સભા વખતે ૩૦) ઉપજેલા તે મળી રૂ૦ ૫૨॥ નું ઇનામ વહેંચયું.

નવાગામમાં વિદ્યાર્થીઓએ અનેક બોધદાયક સંવાદો ભજવી બતાવ્યા હતા, જેમાં અન્યમતીએ પણ ભાગ લીધો હતો. ૧૦ જણે તો દારૂ માંસ છોડયો હતો. વળી વીરચંદભાઇએ નવાગામમાં ૮ વિદ્યાર્થીને ખમીશો ભેટ આપ્યા હતા ને માસ્તરને પણ ઇનામ આપ્યું હતું. એકંદર ચારે પાઠશાળામાં નવાગામ પ્રથમ, બાવલવાડા બીજી, છાણી ત્રીજી ને દેવલની પાઠશાળા ચોથે નંબરે આવી છે. વળી આ ખડક દેશમાં ઉપદેશની બહુજ જરૂર છે માટે જુબિલીબાગ ટ્રસ્ટ ફંડ તરફથી આ વિભાગમાં એક ઉપદેશક જરૂર મોકલવો જોઇએ.

સુરતમાં ત્રણ સંસ્થાઓનો મેલાવડો-સુરતની દિ૦ જૈન પાઠશાળા, દિ૦ જૈન શ્રાવિકા પાઠશાલા તથા ફુલકોર કન્યાશાળાના બાળક બાળકીઓ તથા સ્ત્રીઓને ઇનામ આપવાનો ભેગો મેળાવડો શા. [illegible] ઝવેરચંદ તથા શા. કસ્તુરચંદ બેચરદાસ તરફથી નવાપરામાં જાહેર સડકપર જેઠ સુદી ૧૩ ની રાત્રે ૮ થી ૧૧॥ વાગ્યા સુધી ભારે ઠાઠમાઠથી પં૦ ઉલ્ફતરાયજી દિલ્હી નિવાસીના પ્રમુખપણા નીચે થયો હતો જે પ્રસંગે આશરે ૩૦૦ થી ૪૦૦ સ્ત્રી પુરૂષો હાજર હતા. પ્રથમ ગાયન મંગળાચરણ પછી શા. ઠાકોરદાસ જમનાદાસ ચુડગર તથા શા. છગનલાલ કસ્તુરચંદે રિપોર્ટ વાંચતા જણાવ્યું હતું કે પાઠશાળામાં ૪૨ વિદ્યાર્થી લાભ લે છે, શ્રાવિકા પાઠશાળામાં ૩૦ સ્ત્રીઓ ને ૪૦ છોકરીઓ રોજ બપોરે ત્રણ કલાક ભણે છે તથા ફુલકોર કન્યાશાળામાં ૮૭ જૈન અજૈન બાળકીઓ ધાર્મિક ને વ્યવહારિક બંને શિક્ષણ લે છે. પરિક્ષાફળ સંતોષજનક છે એ પછી પાઠશાળા તથા શ્રાવિકા પાઠશાળાનો ગત વર્ષનો વિગતવાર હિસાબ વાંચી સંભળાવવામાં આવ્યો હતો. બાદ વિદ્યાર્થી અને બાળાઓએ અનેક સંવાદ, ગીત, ગરબા, રાસ, ડ્રીલ, ગાયન વગેરે બે કલાક સુધી કરી બતાવી શ્રોતાઓને આનંદિત કર્યા હતા જે પછી મૂલચંદ કિસનદાસ કાપડિયા, શ્રીમતી મગનબ્હેન (મુંબઇ), શ્રીમતી લલિતાબ્હેન (અંકલેશ્વર) તથા છગનલાલ સરૈયાજીએ આ ત્રણે સંસ્થાઓની સમાલોચના કરી બાળક બાળકીઓના કાર્યથી સંતોષ દર્શાવ્યો હતો અને વ્યવસ્થાની ખામીઓ દુર કરવા ભલામણ કરી હતી જે પછી ખાદીના લુગડાં, બોરસીઓ, ખાદી, ચેક, પુસ્તકો મીઠાઇ વગેરે બાળક બાળકી ને સ્ત્રીઓને વેંચવામાં આવ્યા પછી પ્રમુખનું સમયાનુકૂલ વિદ્વતા પૂર્ણ ભાષણ હિંદી ભાષામાં થયું હતું જે સમયે શા૦ મલુકચંદ કસ્તુરચંદે જણાવ્યું કે પાઠશાળાને દર વર્ષે ૫૧) અને શ્રાવિકા પાઠશાળાને દર વર્ષે ૨૫) શા૦ વખતચંદ ઝવેરચંદ તરફથી આપવામાં આવશે. એ પછી હારતોરા પાન ગુલાબ લઇ મેળાવડો જયધ્વનિ વચ્ચે વિસર્જન થયો હતો.

"जैनविजय" प्रिन्टिंग प्रेस खपाटिया चकला-सूरतमें मूलचंद किसनदास कापड़ियाने मुद्रित किया
और "दिगम्बर जैन" आफिस, चंदावाड़ी-सूरतसे उन्होंने ही प्रकट किया।